भगवान् जगदीश्वर

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ॥

भक्तजनों के संकट छिनमें दूर करे ॥ ॐ ॥

जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मनका ॥ प्रभु ॥

सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तनका ॥ ॐ ॥

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥ प्र० ॥

तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ ॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी ॥ प्र० ॥

पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्ता ॥ प्र० ॥

मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती ॥ प्र० ॥

किस विधि मिलूं दयामय! मैं तुमको कुमती ॥ ॐ ॥

दीनबन्धु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे ॥ प्र० ॥

अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्र० ॥

श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ ॥

हिन्दी भाषा में

चारोंधाम और सप्तपुरी की झांकी

द्वादश ज्योतिर्लिंग

(महात्म्य यात्रा परिक्रमा सहित)

प्रकाशकः—

बी. एन. ब्रजवासी

मथुरा.

१९६७ मूल्य १)२५
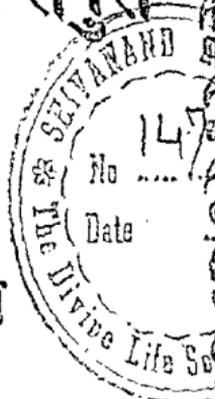
लियो भक्तन हित अवतार कन्हाई तुमने,
नखपर गिरिधारि वृज लियो बचाई तुमने।
जल बरसत महिमा, अगम दिखाई तुमने,
नल कूबर कि जड़योनि छुड़ाई तुमने।
प्रभु अब विलंब क्यों करो हमारी बेरी॥दुख हरो०॥५॥

बैठे सब राज समाज नीति निज खोई,
नहिं कहत धर्म की बात सभा में कोई।
पाँचों पति बैठे मौन कौन गति होई,
ले नन्दनदन को नाम द्रोपदी रोई।
करि करि विलाप संताप सभा में टेरी॥दुख हरो०॥६॥

सुनि दीन बन्धु भगवान भक्त हित कारी,
हरि भये चीर से प्रगट आप बनमाली।
टेरत हरी मतिमन्द वीर बल कारी,
रखि द्रोपति की लाज आज बनवारी।
बरसत सुमन हरष सुर बजावत भेरी॥ दुख हरो० ॥७॥

क्या करूँ द्वारकानाथ मनोहर माया,
अंबरका लगा पहार अन्त नहिं आया।
तिन लोक चतुर्दश भवन चिन्ह दरसाया,
'हमंत' हरो मतिमन्द सपत्तद पाया।
दीननके ही दीनानाथ विपत्ति निवेरी।दुख हरो० ॥८॥

चारो धाम की संक्षिप्त झांकी

भारतवर्ष धर्म प्राण देश है। सृष्टि के आदिकाल से यहाँकी धार्मिक प्रजा अपना सर्वस्व देकर भी धर्म के आराधन और परिपालन में निरत रही है। संसार के अन्यान्य देश जब कि बनचर जीवों की कोटि में रहकर सभ्यता क्या वस्तु है इसका नाम भी नहीं जान सके थे तभी भारतवर्ष के योगी ऋषि मुनि तपस्वी और ब्राह्मणों ने संसार में धर्म की विजय का झण्डा ऊँचा स्थापित किया था।

आदि मानव सभ्यता के संस्थापक भगवान मनु ने सर्वमान्य उद्घोष किया थाः—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः॥ मनुस्मृति

अर्थात–इस (भारत देश) के उत्पन्न हुए ब्राह्मणों के उत्तम चरित्र से सम्पूर्ण विश्व के मानव अपने अपने चरित्रों को श्रेष्ठ बनाने के लिये शिक्षा ग्रहण करें। संसार के आज के सभ्य देश जब भौतिक विज्ञान की पूंछ पकड़ कर मानव सुख का समुद्र पार करने की चेष्टा में प्राणप्राण से जुटे हुए थे तब इस भारत के आध्यात्मक वेत्तागण महा मानव के आध्यात्मिक विकास

आत्म विज्ञान के चिन्तन में दत्त चित्त थे और उनके दर्शन उपनिषदादि की गहन गंभीर गवेषणाओं ने संसार को चकित ही नहीं किया अपितु मानव सुख शाँति का यह स्थाई पथ दर्शन किया जिसकी वजह से मनुष्य युग युग में ऊँचा उठ कर आज की गर्व मय स्थिति में पहुँचने को क्षमता प्राप्त कर सका है सच बात तो यह है कि आज का जड़ विज्ञान कितना भी गति सम्पन्न होने पर भी उस काल के चैतन्य आत्म विज्ञान के आगे "मूक पंगु जड़ान्धवत्" ही है।

उदाहरण के लिये आज के विज्ञान के चका चौंध भरे गढ़ विश्वके पूंजी संचित साधन सम्पन्न नगर जिस सत्वर प्रगति के साथ आगे आये हैं उतनी ही शीघ्रताके साथ उनकी अधःपातन के दिन भी निकट दृष्टि गोचर होते जा रहे हैं, इन सभ्यता, मानव कल्याण, निशस्त्रीकरण, युद्ध विरामऔर परस्पर सद्भाव की निर्मूल पुकार लगाने वालों से संसार का कुछ भी वास्तविक उपकार हो सका है ऐसा दृष्टिपथ में नहीं आता हाँ, गैस, मृत्यु किरण, अणु विस्फोट, विष विकीकरण, शस्त्रास्त्र निर्माण और विश्वविनाश के और अनेक प्रलयंकारी भाइन अस्त्र-

अनुचित मुनाफा खोरी घूँस भ्रष्टचार स्वेछाचार अत्याचार आदि के दुखों ने संसार के जीवों के प्राण घोरतम संकट में डाल दिये है, किन्तु भारतवर्ष की प्राचीन पूर्वी सभ्यता के हाथों युग युगान्त तक विश्व के प्राणियों को सुख सम्पन्नता प्राप्तहुई है। इसे इतिहास का पन्ना पन्ना पुकार कर कह रहा है। हमारी इस सभ्यता के प्रतीक हमारे तीर्थ स्थान आज भी उस युग की पवित्र झाँकी देते हैं। यद्यपि अनादि काल से संस्थापित आडम्बर शून्य इन स्थानोंमें आज केयुग जैसी चकचकाहट विद्युत चकाचौंध नहीं मिलेगी फिर भी वास्तविक शान्ति और ज्ञान के तत्व दर्शी को वह अनुपम अमृत का श्रोत मिलेगा कि जिसे पीकर आत्मा तृप्त और चैतन्य धन जाती हैं।

यों तो भारतवर्ष का प्रत्येक कोना ही पवित्र तीर्थों की मंजुल कुसुम मालासे गुंथा पड़ा हैं उसके तीर्थों की स्थापना इस वैज्ञानिकढंग से कीगई है कि उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक सारा ही देश इस पावन तीर्थ श्रृङ्खला से आबद्ध होजाता हैं। चार धाम सप्तपुरी द्वादश ज्योतिर्लिंग शक्तिपीठ दक्षिण के दिव्य देश उत्तर का ब्रज प्रदेश उत्तर खंकीड तपोभूमि सभी एक से एक निराली वस्तुयें इसदेश के पुण्य अँचल में बिखरी

पड़ी हैं आवश्यकता इनके रहस्य मय स्वरूपजो वास्तविक ही ज्ञान विज्ञान मयहै उसके पारिदर्शन करने वालीसूक्ष्म तत्व दर्शिनी दृष्टि की हैं। परम्परा अथवा रूढ़िवश उस भूमि में भटकते फिरना और वस्तु है और उस स्थान के गूढ़ स्वरूप का दर्शन कुछ और ही वस्तु है। आज भी हजारों लाखों ही यात्री इन स्थानों की पवित्र झाँकी लेने जाते हैं किन्तु वास्तविक लाभ किसी बड़भागी पुण्यवान प्राणी को ही प्राप्त हो पाता है।

अस्तु यात्रा प्रारम्भ करनेसे पूर्व प्रत्येक यात्रालु को गम्यस्थान का दर्शनीय स्वरूप दृष्टि गोचर कर लेना चाहिये। जहाँ आप जा रहें हैं वहाँ क्या है? क्या क्या वस्तु वहां दर्शनीय है, किस क्रम से और किस साधनके साथ वहाँ जाना उपयोगी रहेगा? कितने समय में आप क्या २ देख सकेगे? किन वस्तुओं मे वहाँ सावधान रहना होगा ये बाते ऐसी हैं जिनके जाने बिना यात्रालु का साराही परिश्रम और व्यय निष्फल हो जाता हैं और कभी २ तो यात्री को घोर विपत्ति का सामना पड़ जाता है जिसकी वजह से तीर्थों को बदनाम ही करता रहता है, किन्तु यह उसी के अज्ञान का परिणाम है इसे वह कभी भी सोचने की चेष्टा नहीं करता। ऐसे लोगों ही की यह धारणा बन गई है कि तीर्थों में केवल बुराई

बाईं ओर एक बड़ा पत्थर का मकान है, जिसके साथ ही एक मन्दिर है, इस घाट पर उत्तर की ओर दीवार के नीचे हरि का चरण चिन्ह है, हरि की पौढ़ियों से कुछ दूर पूर्व की ओर गङ्गा के बीच घाट में पानी से थोड़ा ऊपर एक चबूतरा है, सरकार ने इस प्लेटफार्म तथा सीढ़ियों के मध्य में एक छोटा सा पुल बाँध दिया है प्लेटफार्म और पौढ़ियों के बीचमें जहाँ गङ्गा की धारा है उसी स्थान को ब्रह्मकुण्ड कहते हैं, यहाँ बड़ी बड़ी निडर सुन्दर मछलियाँ बहुत हैं। ब्रह्मकुन्ड के पास गंगा जी की धार के बीच में ही मनसा देवी का मन्दिर है। मन्दिर की प्रदक्षिणा यात्री लोग जल ही में करते हैं, ब्रह्मकुन्ड का हरिद्वार में बहुत महात्म्य है, इस स्थान पर ब्रह्माजी ने यज्ञ किया था, यहीं पर श्री गंगाजी का मन्दिर है।

मायापुरी–हरिद्वार से १ मील दक्षिण की ओर है यहाँ पुराने ३ मन्दिर है।

कुशावर्त—हरि की पौढ़ी से दाहिनी ओर प्रसिद्ध घाट है।

नील पर्वत–गङ्गा के पार इस पर चन्डी का मन्दिर है।

कनखल-हरिद्वार से दो मील पर यहाँ तीन प्रसिद्ध व ऐतिहासिक दर्शनीय मन्दिर हैं।

भीमगोडा-करीब ३-४ मील पर पान्डवों के काल से प्रसिद्ध प्राप्त स्थान है।

सप्त सरोवर-भीमगोडा से उत्तर की ओर गङ्गा के किनारे रमणीक स्थान है।

ज्वालापुर-हरिद्वार से ५ मील पर है, गुरुकुल काँगड़ी आर्य महिला विद्यालय, वानप्रस्थाश्रम आदि यहीं हैं।

श्री बद्रीनारायण धाम

उत्तराखन्ड—संसार के प्रसिद्ध पर्वत हिमालय की अंचल भूमि उत्तराखन्ड की भूमि कही जाती है। श्री केदार नाथ, श्री बद्रीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि तीर्थों की भूमि उत्तरा खंड की भूमि है। महाकवि कालिदास के कुमार सम्भव काव्य का प्रथम श्लोक हिमालय को देवतात्मा देवताओं का आत्मा कहकर वर्णन करता है, इसी से इस प्रदेश के प्राकृतिक सौन्दर्य का अनुमान लगाया जा सकता है। कालिदास कहते हैं-

"अस्त्युत्तरस्याँ दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नागाधिराजः।

उत्तर दिशा में देवताओं का आत्मा अर्थात देवताओं को भी प्रिय ऐसा हिमालय नामका पर्वत शोभा देता है।

हिमालय के सौन्दर्य वर्णन से प्राचीन कालके काव्य ग्रन्थ भरे पड़े हैं, किंतु इसके सौंदर्य का वास्तविक आनंद तो इसकी सुषमाको नेत्रों से निहाने पर है। हिमालय की ऊँचाई समुद्र की सतह से दो हजार फीट से अधिक है और कहीं-कहीं तो इसके उत्तुङ्ग शृंगु २६ हजार फीटसे भी अधिक ऊँचे हो गये हैं। इसकी ऊँची शिखरों में (१) बर्तीखूंट (२) नन्दादेवी (३) चौखम्भ (४) नाली-काँठा (५) दूनागिरि (६) त्रिशूली आदि विख्यात हैं। ये हमेशा हिमाच्छादित रहती हैं। यहाँ की नदियों में गङ्गा भागीरथी गङ्गोतरी से १८ मील आगे गौमुख निकलकर देवप्रयाग में आकर अलखनन्दा में मिलती है। यमुना यमनोत्री से निकलकर देहरादून, अम्बाला, सहारनपुर होती हुई देहली राजधानी मथुरा वृन्दावन होती हुई आगरा से आगे जाकर प्रयागराज में गङ्गाजी में मिल जाती है। अलखनन्दा नदी श्री बद्रीनारायण के उत्तर में अलकापुरी पर्वत से निकलकर देवप्रयाग में भागीरथी में मिल जाती है। बद्रीनारायण के मार्ग और उत्तराखण्ड की भूमि में अनेक गङ्गायें पड़ती हैं, किन्तु

उनप रख यात्रियों के साथ प्रेमी मित्र बन जाते हैं
ग ंगाका पाकर यात्री का सब रुपया पैसा नगदी ले
चम्पत होजाते हैं। ऐसे ठगों से यात्री को सावधान
ाना चाहिए। बिना जाने किसी के हाथका प्रसाद आदि
। लें न किसी को अपना सामान बिना जाने सुपुर्द करें।

श्री बद्रीनारायण यात्रा

श्री बद्रीनारायण की यात्रा में प्रमुख स्थान जो
आते हैं वे इस प्रकार हैं:—यह यात्रा हरिद्वार से प्रारम्भ
होती है हरिद्वार गङ्गा के तट पर बसा पहाड़ के अंचल
में प्राकृतिक सौंदर्य से पूर्ण एक सुन्दर स्वास्थ्यप्रद नगर
है। गर्मियों में यहाँ यात्रा का आनंद आता है। हरिद्वार
से आगे ऋषिकेश, लक्ष्मनझूला, स्वर्गाश्रम, देवप्रयाग,
रुद्र प्रयाग, गुप्तकाशी, नारायणकोटि, त्रियुगी
ारायण, गौरी कुण्ड, केदार नाथ, ऊखीमठ, तुङ्गनाथ,
कर्णवद्री, जोशीमठ, विष्णुप्रयाग, भविष्यवद्री, शेषधारा
आदि होकर श्री बद्रीनाथ धाम आता है। इस स्थान पर
पानीनन्दा नदी उत्तर दिशा से आई है जो मन्दिर के
रूप ही बहती है। यह स्थान समुद्रतल से २३२००
ऊँचा है और वर्ष में कई महीने हिमाच्छादित रहता
दी जाती है। श्री व.पर्वत श्रंग सदैव ही हिम भूषित

कृष्ण ने विश्राम लिया है। ब्रजभूमि में अनेकों दर्शनीय स्थान हैं जो डेढ़ महीने की वन यात्रा करने पर ही देखे जा सकते हैं। यह यात्रा भाद्रपद शुक्ला ११ के करीब प्रतिवर्ष होती है और उसमें हजारों यात्री जाता है। यह ब्रज के स्थानों में घूमकर दीपावली के लगभग वापिस आती है भगवान कृष्ण के लीला स्थल और ब्रज की रमणीक भूमिका आनन्द इसी यात्रामें देखने को मिलता है। जहाँ भगवान ने जो लीला की है वही लीला रास-मंडली द्वारा वहाँकी जाती है जो बड़ी मनोरम होती है ब्रज के दर्शनीय स्थानों में वृन्दावन, गोकुल, महावन ब्रह्माण्डघाट, गोवर्धन, डीगभवन, काम्यवन, नन्दगाँव बरसाना आदि मुख्य हैं। वृन्दावन तो मन्दिरों का घर ही कहा जाता है। यहाँ के आलीशान मन्दिर देखने ही लायक हैं। खासकर श्रीरङ्गजी का मन्दिर, शाहबिहारी लाल का मन्दिर, लालाबाबू का मन्दिर, गोपेश्वर महादेव, वंशीवट, ब्रह्मचारी का मन्दिर, गोपीनाथजी, राधारमणजी, निधिवन, सेवाकुंज, कालीदह, बाँकेबिहारीजी आदि के मंदिर दर्शनीय हैं।

यहाँ कुछ ऐसे भी मंदिर हैं जहाँ यात्री को अटका भेट आदि के बहाने फँसाकर उससे बहुत सा रुपया ले लिया जाता है। यात्री को बाद में जब वह जाल मालूम

होता है तो वह बहुत पछताता है अतः यात्री को पहिले ही से सावधान रहना चाहिये।

मथुरा में भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि, कटरा केशवदेव, पोतराकुण्ड, द्वारिकाधीशका मन्दिर, विश्राम-घाट की यमुनाजी की आरती, रङ्गभूमि, कंसवध का स्थान, आदि वाराह (सतयुग की मूर्ति) दाऊजी मदन मोहन जी, गतश्रम भगवान, मथुरानाथ, विजयगोविन्द गोवरधननाथ, कन्हैयालाल, लक्ष्मीनारायण गोविन्द-देवजी, गोपीनाथजी, किशोरीरमणजी के मन्दिर दर्शन योग्य है। शहर के बाहर बिरला मन्दिर, अजायबघर, शिवस्थल कुण्ड, ध्रुवजी का स्थान, सप्त ऋषि टीला, भूतेश्वर, रंगेश्वर, कङ्कालीदेवी, महाविद्या, चामुण्डा-देवी, गोकर्णनाथ शिव अम्बरीष टीले के महावीर का किला, पंचमुखी हनुमान, अष्टभुजी दुर्गा आदि देखने योग्य हैं। यमुना के पार दुर्वासाऋषि का आश्रम दर्श-नीय है। यहाँ पर भी स्टेशन से बहकाकर अपने मकानों में ले जाकर ठहराने वाले नकली पंडाओं से यात्री को सावधान रहना चाहिये। मथुरा में सभी प्रांत और जातियों की धर्मशालायें करीब दो सौ के हैं। अतः यात्री को सुभीतानुसार धर्मशाला में ही ठ[illegible]। चाहिये।

यहाँ के असली पंडे जो पूवजों के नाम रखते हैं यात्री को कोई कष्ट नहीं होने देते और व्यवस्था ठीक कर देते हैं, किन्तु धोखेबाज लोग जो खुद पण्डा बन जाते हैं और राड़ों को यात्री के मनोरंजन के लिए रखते हैं। वह यात्री को असली पंडाओं से नहीं मिलने देते इस प्रकार तीर्थ को बदनामी और उसके प्रति अश्रद्धा उत्पन्न कराते हैं। अतः यात्रीको इनसे सावधान रहना चाहिये।

ब्रज-यात्रा के मुख्य स्थानों की दूरी

पैदल यात्रा के क्रमानुसार—मीलों में

मुकाम	यात्रा से	मुकाम	यात्रा से
मथुरा	०	गोवरधन	१
मधुवन	३	चन्द्रसरोवर	२
तालवन	३	पैंटा	२
कमोदवन	२	जतीपुरा	३
शान्तन कुण्ड	३	दीग	६
बहुला वन	५	कामतरो	३
माधुरी कुण्ड	४	घाटो	३
राधा कुण्ड	२॥	कामवन	३
कुसुमसरोवर	१	बरसाना	४

संकेत	२	कोसीकलाँ	४।
महेराना	४	चौगाँव	२॥
नन्द गाँव	३	शेरगढ़	५
करहला	४॥	चीर घाट	५
जाव	४	बच्छवन	६
कोकिलावन	२	श्यामवन	१
बठैन	१	भाँडीरवन	२
कामर	३	भाँटवन	२
कोटवन	२॥	बेलवन	२
		वृन्दावन	२॥

(वृन्दावन से अक्रूर भतरोंड होकर वृन्दावन लौटना)

वृन्दावन से लोहवन १० अंदौवंदी होते हुए दाऊजी १

ब्रह्माण्डघाट	४	चिताहरन	१
रमन रेती	१	महावन	१
गोकुल	२	गावल	३
		मथुरा वापिस	३

काशीपुर (बनारस)

भारतवर्ष के तीर्थों में काशी अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। अत्यन्त प्राचीन काल से काशी "विद्या का घर" के नाम से प्रसिद्ध है भारतीय। इति-

हास के वैभव काल में यह पुरी अपने महत्वपूर्ण
विमर्ष के लिये सारे देश में पथ दर्शक रही है। अ
विषय के प्रत्येक विद्वान के लिये अपने सिद्धान्त
सार्वभौमता प्रमाणित करने को काशी में उसकी मान्य
स्वीकार करानी पड़ती थी और प्रत्येक धार्मिक माम
में किसी युग में काशी के पंडितों की व्यवस्था सर्वो
समझी जाती थी काशी सप्तपुरियों में अपना वि
स्थान रखती है, कहते हैं जिस प्रकार मथुरापुरी वि
भगवान के सुदर्शनचक्र पर स्थिति है उसी प्रकार का
भगवान शङ्कर के त्रिशूल पर स्थापित है दोनों ही पु
तीन लोक से न्यारी है और दोनों का ही प्रलय
नाश नहीं होता है —

तीन लोक से मथुरा न्यारी, तीन लोक से काशी।
प्यारी एक श्यामसुन्दर की, दूजी प्रिय अविनाशी॥
तीन काल में रहें निरन्तर, लीलाधाम विलासी।
भगवदरूप मुक्ति की दाता, पूरण ब्रह्म प्रकाशी॥

एक विद्वान के शब्दों में हमारी यह सातों पुर
भारतवर्ष के धार्मिक देह में सप्त प्राण के समान है ज
समय समय पर हमारी आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत
रखकर हमें विश्व कल्याण के मार्ग में बढ़ने के लिए
अनुप्रेरित करती रहती है। काशीपुरी हमारी इन्हीं

पुरियों में से एक है। प्राचीन शास्त्रों में स्थान स्थान पर इसकी महिमा का वर्णन पाया जाता है। प्रसिद्ध सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र को इसी पुरी में डोम के घर रह कर उसकी सेवा करनी पड़ी थी, गौतमबुद्ध ने यहीं सारनाथ में अपने धार्मिक सिद्धान्तों का उद्घोष किया था। जगद्गुरू शङ्कराचार्यने यहीं बौद्ध धर्म को परास्त कर सनातन धर्म की ध्वजा फहराई थी। काशी शङ्कर की पुरी है अतः यहाँ गलीगली में आपको शिव मंदिर देखने को मिलेंगे, फिर भी "राँड साँड सीढ़ी सन्यासी इनसे बचे तो सेवै काशी" के अनुसार यदि आप देखेंगे तो आपको इसकी भी सत्यता अनुभव हो ही जायगी। भीख माँगने वाली स्त्रियाँ, राँड साँड, घाटोंकी टूटी फूटी और बहुत दूर तक ऊँची नीची सीढ़ियाँ, साधू और सन्यासी सचमुच इन सभी का यहाँ काफी जोर है। कहते हैं काशी में मरने से मुक्ति मिल जाती है अतः अनेक लोग देह त्यागने के विचार से ही यहाँ आकर रहते हैं यहाँ की गली भी तीन लोक से न्यारी ही होती हैं। इतनी तङ्ग गली जहाँ दिन में भी सूर्य की किरणें शायद ही प्रवेश पा सके इस स्थानको छोड़ और कहीं देखने को नहीं मिलेगी। यह पुरी गङ्गा के किनारे पर बसी और करीब ५० घाट इसकी शोभा को बढ़ाते

है इनकी शोभा राजघाट के पुल से अथवा माधवराय के धरहरे से देखी जा सकती है। रात के समय जब बिजली की बत्तियाँ घाटों पर जगमगाने लगती हैं उस समय काशी की शोभा देखने की ही वस्तु होती है।

विजया कहें सो बाबरे, भाँग कहें वे कूर।
इसका नाम कमलापती, नयन रहत भरपूर॥

बूँटी (भंग) छानना और नाव में सैर करना काशी के लोगों की एक परमप्रिय वस्तु है। इसके लिये यहाँ बड़ी बड़ी सुन्दर नौकायें हैं जिनमें गाने बजाने और नाच रङ्ग खास अवसरों पर किये जाते हैं। गाने की चीजों में बनारस की ठुमरी कजली प्रसिद्ध है। बनारस में विश्वनाथ जी का मन्दिर दर्शनीय है यह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से है अतः इसकी बहुत महिमा है विश्वनाथ जी का मन्दिर बहुत छोटा है मूर्ति भूमि में नीची होने के कारण पुष्प माला और बिल्व पत्रों से प्रायः ढकी रहती है। मन्दिर लाल पत्थरका प्राचीन बना है। इसके दरवाजे-छोटे हैं फर्श में कहीं कहीं रुपये जड़े गये हैं। मन्दिर की शिखर सोने के पत्र से मढ़ी हुई है जो रणजीत सिंह महाराणा की बनाई हुई कही जाती है। चारों और अनेक देवी देवताओं की मूर्तियाँ हैं। पीछे ज्ञान वापी नामका एक प्रसिद्ध कुँआ है, कहते हैं

जब अत्याचारी औरङ्गजेब ने इस मन्दिर पर आक्रमण किया तो विश्वनाथजी इसी ज्ञानवापी कुऐं में प्रवेश कर गये। भक्त लोग यहाँ पुष्प और पैसा चढ़ाते हैं। यहाँ नन्दीश्वर जो ७ फीट ऊँचा विशालकाय पाषाण निर्मित हैं दर्शनीय है, यह नैपाल महाराज द्वारा भेंट किया गया है।

मन्दिर के समीप ही शनिश्चरदेव का मन्दिर, महावीर, अक्षयवट और फिर अन्नपूर्णा जी का मन्दिर दर्शनीय है। भगवान शङ्कर जगत प्रतिपालिनी अन्नपूर्णा के यहाँ भिक्षा ग्रहण करते हैं, किसी कवि ने ठीक ही कहा है "दिगम्बर कन्थ जीवन अन्नपूर्णा न चेद्ग्रहे" आप नङ्गे, विष का भक्षण, पुत्र हाथी से आहार वाला, बल, सिंह, मूषक, मोर, सर्प, भूत, प्रेतों की जमात परन्तु आमदनी के नाम डमरू की डिमडिमासी स्थिति में शङ्कर कैसे निर्वाह करते यदि अन्नपूर्णा घर में न होती ? अतः भगवती अन्नपूर्णा का मन्दिर अवश्य दर्शनीय है। यहीं लक्ष्मी नारायण की स्त्री का मन्दिर है जिसमें कालीजी, कृष्णजी, रामसीता, शिव और गङ्गा जी की मूर्ति दर्शनीय है। काशी के कुछ प्रसिद्ध मन्दिर इस प्रकार हैं—

(१) भैरवनाथ (२) गोपाल मन्दिर (यह चौखम्भा

पर वल्लभकुल सम्प्रदाय का मन्दिर है) (३) मुकुन्द-रायजी (यह भी वल्लभकुल का मन्दिर है) (४) रणछोर जी का मंदिर (५) बड़े महाराज का मन्दिर (६) बल्देव जी मन्दिर (७) दाऊजी (८) गोरखनाथजी का मन्दिर (मन्दाकिनी मुहल्ले में गोरख टीले पर) (९) राम मन्दिर (देखने योग्य सुन्दर) (१०) दुर्गाजी (११) वागीश्वरी देवी (यहाँ नाग कुआ भी है) (१२) लाट भैरव (समीप ही कपाल मोचन कुण्ड है) (१३) भारत माता मन्दिर (कई लाख की लागतमें श्री शिवप्रसादजी गुप्तने इसका निर्माण किया है इसमें संगमरमर से भारतवर्ष का मानचित्र (नक्शा) नदी पर्वतादि सहित बहुत सुन्दर बनाया गया है जो दर्शनीय है।

यहाँ के कुछ और दर्शनीय स्थान इस प्रकार हैं—

(१) बाबूशिवप्रसादजी गुप्त की कोठी—यह नगवा नाम के मुहल्ले में है, काशी आने वाले नेतागण प्रायः यहीं ठहरते हैं।

(२) राजा मोतीचन्द की कोठी यह बहुत आलीशान और अमीरी ठाठ की चीज है। यहाँ मोतीझील नाम का तालाब भी है जो दर्शनीय है।

(३) काशी नरेशकी कोठी—नदेश्वर मुहल्ले में है।

(४) कबीर चौरा—यहाँ कबीर के स्मारक रूप

उनके च णचिन्ह और टोपी सुरक्षित हैं यहाँ उनकी गद्दी भी पूजी जाती है।

(५) अढ़ाई कंगूरा मसजिद।

(६) हिन्दू विश्वविद्यालय—यह भारत धर्मप्राण पंडित मदनमोहन मालवीय जी के सद्प्रयत्न से सन् १९१६ में संस्थापित किया गया है इसमें चालीस के करीब विभाग कार्य करते हैं प्रत्येक विभाग अपने कार्य क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखता है। इस एक ही कालेज ने हिंदू गौरवको बहुत ऊँचा मान दिया है। इसके जोड़ की कोई संस्था भारतवर्ष एवं अन्य देशों में नहीं है।

भारत की प्राचीन कला और विज्ञान को आधुनिक शोधों के आधार पर उन्नत करने का यह संस्था महान प्रयत्न करने में जुटी हुई है हिंदू चिकित्सा विज्ञान (आयुर्वेद) स्वास्थ्य विज्ञान (मल्लविद्या) आध्यात्मक विज्ञान (दर्शनशास्त्र) नीति शास्त्र, भौतिक विज्ञान, संस्कृति विज्ञान, समाज शास्त्र आदि विषयों पर यहाँ गहरा अध्ययन शिक्षार्थियों को कराया जाता है। यहाँ लक्ष्मीनारायण मंदिर तथा कैलाश मंदिर भी दर्शनीय है। विश्वविद्यालय का विस्तार बहुत बड़े क्षेत्र में है और यहाँ की इमारतें,बहुत विशाल दर्शनीय और हिंदू

स्थापत्य कला के आधार पर निर्माण की गई हैं। कुल घेरा मिलाकर करीब ६ मील के है।

काशी के मुख्य-मुख्य घाट—

(१) वरुणा सङ्गम घाट (यहाँ वरुणा नदी गङ्गामें मिलती है) राजघाट (पीपों का पुल बना है) (३) प्रहलाद घाट (यहाँ कुछ समय अपने मित्र गङ्गाराम ज्योतिषी के घर श्री तुलसीदास जी ने निवास किया था) (४) त्रिलोचन घाट (यहाँ विष्णु भगवान द्वारा पूजन में १ कमल कम हो जाने पर चढ़ाये गये नेत्र को शङ्कर ने धारण किया और तभी से त्रिलोचन नाम पाया) (५) गया घाट (६) ब्रह्मघाट (७) दुर्गाघाट (दुर्गा और बिट्ठोवा मन्दिर) (८) पंचगङ्गा और माधवराय घाट (यहाँ पन्डितराज जगन्नाथ ने गङ्गालहरी प्रकट की और एक एक छन्द पर गङ्गा माता एक एक सीढ़ी चलती गई और पंडितराज के अंतिम छंद पर अपनी गोद में ले लिया। प्रसिद्ध माधवराय का धरहरा भी यहीं है जिसे तोड़कर औरङ्गजेब ने मसजिद बनादी है) (९) भोसलाघाट (१०) सिन्धिया घाट (बहुत सुंदर पक्का घाट है) (११) मणिकर्णिका घाट (यहाँ राजा अलवर अमेठी के तथा दाऊजी, नृसिंहजी, सिद्धविनायक के मन्दिर हैं यहाँ स्नान का बहुत महात्म्य है। काशी

आने वाले यात्री एक बार यहाँ स्नान अवश्य करते हैं) (१२) चिता घाट (काशी महाश्मशान प्रसिद्ध है यहाँ प्रायः चितायें जला ही करती हैं (१३) ललिता घाट (यहाँ ललिता जी का नैपाली का तथा और कई शिव मंदिर है) (१४) मान मन्दिर घाट (यहाँ जयपुर के राजा मानसिंह की बनाई प्राचीन वेधशाला है जिसमें नक्षत्रों का गति जानने के कितने ही बहुमूल्य यंत्र स्थापित हैं (१५) दशाश्वमेध घाट (यह काशी का जनप्रिय घाट है जहाँ हमेशा बड़ी भीड़ लगी रहती है इसे बम्बई की चौपाटी अथवा हरिद्वार का प्लेटफार्म (हरि की पौड़ी) कहें तो अत्युक्ति न होगी) (१६) अहिल्याबाई घाट (१७) केदारघाट (१८) हरिश्चन्द्रघाट (सत्य प्रतिज्ञ राजा हरिश्चन्द्र ने यहीं डोम की नौकरी स्वीकार करके "कर" वसूली का कार्य किया था) (१९) शिवाला घाट (२०) जानकी घाट (२१) तुलसीघाट (यहाँ तुलसीदासजी ने ग्रंथ रचना की है (२२) असी-घाट (यहाँ गोसाईं तुलसीदासजी ने देह छोड़ी है।

काशीपुरी सभ्यता, कला और साहित्य का भी सदा से केन्द्र रही है। रामानंद, कबीर, तुलसी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द, पं० अम्बिकादत्त व्यास, श्रीजयशङ्कर प्रसाद, डा० भगवान

दास, बा० श्यामसुंदरदास, हरिऔध जी आदि की यह निवास भूमि रही है साथ ही संस्कृत के धुरन्धर विद्वान् नारायन भट्ट, शङ्करभट्ट, नीलकंठभट्ट, कमलाकर भट्ट, लक्ष्मीधर सूरि, भट्टाजी दीक्षित, नागोजी, रघुनाथ, गोकुलनाथ, बापूदेवशास्त्री, सुधाकर द्विवेदी, शिवकुमार शास्त्री यहीं के निवासी थे।

काशीका वर्णन अधूरा रह जायगा यदि हम यहाँ की संस्थाओंका वर्णन न करें। इनमें नागरी प्रचारिणी सभाका नाम प्रमुख उल्लेखनीय हैं। इस सभाने हिन्दी की प्रशंसनीय रूपसे सेवा की है, इसका अपना प्रकाशन विभाग है, बहुमूल्य संग्रहालय है जहाँ प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थ, चित्र, मूर्तियाँ सुरक्षित हैं। भारत धर्म महामण्डल और कारमाईकल लाईब्रेरी भी यहाँ की प्राचीन संस्थायें हैं। यहाँ का मुख्य व्यापार जरी के काम का है, बनारसी साड़ी, दुपट्टे बहुत कीमती और चित्ताकर्षक होते हैं। इनके अलावा यहाँके रेशमी कपड़े लकड़ी के खिलौने, पीतल के बर्तन, सुरती (तम्बाकू) गोटा पट्ठा, पीतल की देव मूर्तियाँ, चाँदीकी नक्काशी का काम, पान और लङ्गड़ा आम आदि अपनी कुछ खास खूबी रखते हैं यहाँ से कुछ दूर पर रामनगर (काशी नरेश) का किला भी देखने योग्य है वहाँ की

रामलीला बहुत नामी होती है और नाटी इमली का भरतमिलाप देखने को लोग दूर दूर से आते हैं।

काशी में रामनवमी, शिवरात्रि, बुढ़वा मंगल और सूर्य चन्द्र, ग्रहण मेले बहुत भारी होते हैं जिनमें काफी भीड़ इकठ्ठी होती है।

सारनाथ

सारनाथ बौद्ध धर्मावलंबियों का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यह काशी से चार मील पड़ता है। यहाँ जाने के लिए बनारस से इक्के, ताँगे मिलते हैं। बी० एन० डब्ल्यू रेलवे पर यह एक छोटा सा स्टेशन पड़ता है जहाँ से सीधी पक्की सड़क प्राचीन दर्शनीय स्थान की ओर को जाती है। यहाँ बौद्धकालीन मन्दिर के भग्नावशेष देखने को मिलते हैं। सम्राट अशोक के समय सारनाथ अपने चरम उत्कर्ष को पहुँच चुका था जिसका वर्णन बड़े प्रभावशाली शब्दों से चीनी यात्री हेनसाँग और फाहियान के यात्रा वृत्ताँतों में मिलता है। प्राचीन काल में यहाँ बौद्धों का बहुत बड़ा शिक्षा केन्द्र एक विहार था जिसमें हजारों बौद्ध भिक्षु रह कर बौद्ध धर्म की शिक्षा ग्रहण करते और उसे आचरण में लाने का व्यवहारिक पाठ ग्रहण करते थे। यहाँ एक बुद्ध लाइब्रेरी बुद्ध अस्पताल एवं बुद्ध भगवान का मन्दिर है यह मन्दिर

बौद्ध धर्मकी सम्मानित संस्था महाबोधी सोसाइटी द्वारा निर्माण कराया गया है और इसके लिये चीन जापान और वर्मा के बौद्ध धर्मानुयायियों ने मुक्तहस्त से दान दिया है। मन्दिर बौद्ध कला का एक बहुत सुन्दर नमूना है। बाहर दरवाजे पर एक बहुत बड़ा घन्टा लगा हुआ है अन्दर ऊँचे चबूतरे पर बुद्ध भगवानकी सिंहासन स्थित मूर्ति है। मन्दिर में बुद्ध भगवान के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओंके बड़े सुन्दर चित्र अंकित किये गये हैं जो जापानी कलाकृति होते हुए भी भारतीय चित्र कला शैली के उत्तम नमूने प्रतीत होते हैं। यहाँ आपको स्वच्छता और शान्ति का अद्भुत साम्राज्य देखने को मिलेगा, आडंबर शून्यता भी यहाँ की एक आकर्षक वस्तु है, थोड़ी ही दूर पर सामने बोधि वृक्ष की शाखा से लगाया गया एक वृक्ष है जो अत्यन्त पवित्र माना जाता है। भगवान बुद्ध ने बोधि सत्व की प्राप्ति के बाद सर्व प्रथम यहीं "धर्मचक्र प्रवर्तन" अर्थात् धर्म प्रचार का उद्घोष किया था। यहींसे उत्पन्न होकर बुद्ध धर्म की पतली सी शाखा ने सारे संसार में फैलकर करोड़ों आदमियों को अपनी आश्रय रूपी शीतल छाया देकर शान्ति प्रदान की थी। एक सौ दस फीट ऊँचा धमेख स्तूप इसी का प्रतीक रुप यहाँ अभी भी खड़ा

। दूसरा छत्र चतुर्दिक सिंहाकृति अशोक स्तम्भ भी हाँ स्थित है जिसमें प्राचीन लिपि में अशोक की धर्म ाज्ञायें अंकित हैं और भी कितने ही शुङ्गकाल के, ौर्यकाल के, कुषाण काल के भग्नावशेष और स्मृति चिन्ह यहाँ उपलब्ध हैं जो पुरातत्व के विद्यार्थियों के लिये बड़ी ही उपादेय वस्तुएं हैं। यहाँ आर्यधर्म संघ ारा निर्मित एक सुन्दर धर्मशाला भी है। एक चीनी ात्रियों की धर्मशाला भी यहाँ है। धम्मेख स्तूप, मूल-न्धकुटी, बिहार आदि दर्शनीय है।

सारनाथ में एक प्राचीन वस्तुओं का संग्रहस्थान ाजायब घर भी है, यहाँ दो आनेका टिकट लेकर जाना ड़ता है। इसके अन्दर प्राचीन सिक्के, मूर्ति, टूटे-फूटे राने वर्तन, शिलालेख आदि संग्रह किये गये हैं जिनमें द्ध की कुछ प्रतिमायें प्राचीन कला की दृष्टिसे अत्यन्त ूल्यवान हैं।

अयोध्या (अवधपुरी)

अयोध्यापुरी भगवान रामचन्द्रकी पुरी है। अत्यन्त ाचीन काल से सूर्यवंश के प्रतापी राजा इस पुरी में ासन करते चले आये हैं इनमें इक्ष्वाकु, मान्धाता, म्बरीप, त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र, सगर, दलीप, भागीरथ,

खट्वाङ्ग, रघु, अज दशरथ आदि प्रसिद्ध हैं। सप्तपुरिय में अयोध्या की गणना सर्व प्रकार की जाती है, यथा-

अयोध्या मथुरा माया काशी काँची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्षदायिका॥

अर्थात अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, काँच उज्जैन और द्वारिकापुरी ये सात पुरी मोक्षको देने वाल हैं। अयोध्या का वर्णन अनेक प्राचीन ग्रन्थों में पाय जाता है इनमें वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायर पद्मपुराण, श्रीमद्भागवत, महाभारत, शिव-गरुड़, स्कन्द पुराणादि मुख्य हैं। अयोध्या फैजाबाद के समीप लखनऊ से ८६ मील की दूरी पर स्थित है। फैजाबाद रं अयोध्या ४ मील की दूरी पर है। यहाँ रेलवे स्टेशन भी है। नगर नदी के किनारे बसा हुआ है, यह सरयू नदी बहुत गहरी और बड़े दरिया के रूप में बहती है जिसमें बड़ी बड़ी नावें और स्टीमर तक चलते हैं, नदी में बड़े-बड़े जलजन्तु मगर, घड़ियाल, सूँस, कछुए वगैरह भरे पड़े हैं। नगर में बन्दरों का बड़ा जोर है, यहाँ पूड़ी मिठाई वगैरह सभी चीजें जाली में मीखचों के अन्दर बेची जाती है फिर भी टीन की छतों पर बन्दरों के कूदने से जो धमाके होते हैं उससे नये आये हुए यात्री को इनकी सर्वव्यापकता सहज ही में अनुभव हो

जाती है। मैं जब अयोध्या जी देखने गया था तब म
में अयोध्या के मथुरा जैसी ही होने का अनुमान लग त
गया था, परन्तु यहाँ सरयू नदी का विशाल अ क
और वानर सेना का सार्वभौम आतंक देखकर अयोध्य
की मथुरा से प्राथमिकता स्वीकार करनी ही पड़ी
आइये अब आपको पुरी के कुछ प्रसिद्ध स्थानों के दश
करादें, प्रथम यहाँ के घाट ही लीजिये—

(१) ऋणमोचन घाट (२) सहस्र धारा घाट (
लक्ष्मण घाट (लक्ष्मण जी मन्दिर) (४) स्वर्गद्व
घाट (यहाँ शाम को सरयू माता की आरती होती
महाराज कुश के स्थापित किये शङ्कर भगवान के दश
हैं। भगवान रामचन्द्रजी का प्राचीन मन्दिर है, जैन
का आदित्यनाथ मन्दिर भी यहीं है (५) गङ्गामह
घाट (६) शिवालय घाट (७) जटाई घाट (८) अहिल
बाई घाट (यह इंदौर की रानी अहिल्याबाई का बनवा
है, यहाँ सोने की सीता बनाकर रामजी ने अ । । र
किया था) (६) धौरहरा रूपकला घाट (१०) नया घ
(समीप ही बाबा मनीराम जी का आश्रम, तुलसीद
जी का मन्दिर है, निकट ही रामजी का मन्दिर भी
(११) जानकी घाट (१२) राम घाट।

अयोध्या में हनुमान गढ़ी का मन्दिर सबसे प्रथ

है यहाँ भगवान का प्रसाद दुकान पर मोल बिकता
मन्दिर काफी ऊँचाई पर बना है जहाँ हनुमान
विशाल छवि देखने ही योग्य है। मन्दिर का प्रब
यहाँ के महन्तजी के हाथ में है। मन्दिर में बहुत
कोठरियाँ हैं जिनमें साधू लोग निवास करते हैं। यहाँ
निकल कर कुछ ही दूर पर सुग्रीव और अङ्गदजी के टी
है इनसे आगे रामजन्म स्थान, यज्ञवेदी है जिसे दु
यवनों ने तोड़कर अपनी राक्षसी लीला के स्मारक स्वरू
मसजिद खड़ी कर दी है। ऐसी मसजिदें अनेक ती
स्थानों पर हैं जो यह पुकारकर कहती हैं कि क्या हमा
रहते हिन्दू मुसलिम एकता की असली सड़क बनाई ज
सकती है ? यहीं पास में एक चबूतरे पर राम लक्ष्मण
आदि चारों के दर्शन हैं। छटी को चून्हा, सीत
रसोई, कोप भवन' रङ्गमहल, साक्षी गोपाल आदि स्था
यहाँ देखने योग्य हैं। यहाँ से लौटकर मार्ग में कनक
महल है जो अपने सौंदर्य और विशालता के लिये
प्रसिद्ध है यहाँ की लावण्यमयी भगवद् मूर्तियाँ बड़ी ही
मनोहारिणी हैं। थोड़ी ही दूर पर तुलसी चौरा नाम का
वह स्थान है जहां गोस्वामी तुलसीदास ने रामायण की
रचना की है। बस्ती के अन्दर सुरसरि रानी का मन्दिर
नरहन रानी का मन्दिर, बेतिया राजा, टिकारी राजा,

भिनगा राजा, रुसी बाबू के मन्दिर, राजा मोतीचन्द गोविन्ददासजी के मन्दिर, रोजद्वार, पंच मन्दिर, कनक भवन, सीता रसोई, राग कचहरी, कोप भवन, आनन्द भवन, राजमहल, रतन सिंहासन, अयोध्या महल आदि स्थान देखने के योग्य हैं। अयोध्यापुरी की परिक्रमा ६ कोस की है ८४ कोस की परिक्रमा भी कुछ धर्म प्रेमी करते हैं। परिक्रमा में रघुनाथदास का मठ, सीता कुण्ड, अग्नि पर्वत, विद्य कुण्ड मणिवान पर्वत, कुबेर पर्वत, सुग्रीव पर्वत लक्ष्मण टीला, स्वर्ग द्वार और रामघाट आदि अनेक स्थान देखने योग्य हैं।

प्रयाग (इलाहाबाद)

तीर्थराज प्रयाग उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख नगर है। प्रयागको सब तीर्थों के राजा होने का सौभाग्य प्राप्त है। यह नगर गंगा यमुना और सरस्वती के सङ्गम पर बसा हुआ है। गंगा और यमुना तो प्रत्यक्ष है, परन्तु सरस्वती यहाँ गुप्त रूप से बहती है प्रकट में उनका कोई रूप देखने मे नहीं आता किन्तु प्राचीन मान्यता यह बतलाती है कि किसी समय यहाँ तीनों ही नदियों का परम पावन समन्वय हुआ था। गङ्गा की धवलधारा और यमुना की श्यामसुन्दर छटा दोनोंका मिलन देखने

गी योग्य है सचमुच वह प्राणी परम भाग्यवान है जो इस पुण्य संगमतीर्थ में स्नान का सुखद फल प्राप्त करता है। एक ओर भगवती भागीरथी की उछलती छलकती चंचल तरङ्गमयी दुग्धफेनोपम शुभ्रधारा दूसरी ओर कलिन्दनन्दिनी श्री यमुना महारानीजी की नीलछटामयी गम्भीर शान्त स्थिर धारा और जहाँ दोनों का मिलन होता है वहाँ का सुन्दर वर्ण सामँजस्य बड़ी ही अनुपम वस्तु है। संगम पर प्रायः जल थोड़ा ही रहता है किंतु कभी गङ्गा यमुना को पीछे ढकेल देती है और कभी यमुना गङ्गा को ढकेलती आगे बढ़ती चली आती है साथ ही उस स्थान पर दो कदम इधर ही उथली धार और दो कदम उधर ही अथाह जलराशि बीच में स्नान का जो आनन्द आता है वह अवर्णनीय है।

प्रयाग में माघ महीने में प्रतिवर्ष मेला लगता है, जहाँ विस्तृत रेती के मैदान में झोंपड़ी लगाकर लोग पूरे महीने तक कल्पवास करते हैं। इसी रेती में मेले के अवसर पर बाजार लगता है, साधु और पंडों की झोंपड़ियाँ और अखाड़े भी यथास्थान यहीं पर जमजाते हैं। प्रति बारहवें वर्ष यहाँ कुम्भ का बड़ा भारी मेला होता है। प्रति बारहवें वर्ष अर्धकुम्भी का समारोह एकत्रित होता है। इन अवसरों पर देशभर से लाखों संत

महन्त, सेठ साहूकार, अमीर-गरीब, नरनारी जमा होते हैं। बिना किसी विज्ञापन के प्रत्येक अवसर इतने बड़े जन-समुदाय का समागम वास्तव में एक कौतूहल पैदा करने वाली वस्तु होती है, साथही इससे यहभी अनुमान लगाता जा सकता है, कि हजारों, लाखों वर्षों से हमारे धार्मिक संस्कार और विश्वास हमारे जीवन में कितने घुल मिल गये हैं कि उन्हे अनुप्राणित करने के लिये हमें किसी अन्य बाहरी आवाहन की आवश्यकता नहीं होती साथ ही इन विराट् धार्मिक आयोजनोंसे उन लोगोंकी भी कुछ आँखें चकाचौंध हो जाती हैं जो यह समझते हैं कि धर्म की जड़ खोखली हो गई है और जनता का अब उस पर से विश्वास उठता जाता है।

प्रयाग में वेनीमाधव का मन्दिर और किला देखने योग्य स्थान है किला यमुना के तट पर बहुत बड़ा और मजबूत बना हुआ है। आपने दिल्ली और आगरे के शाही किले भी शायद देखे होंगे, परन्तु इस किले की बनावट कुछ अजीब ही है। प्रायः किले ऊँची दीवारों से घिरे हुए बनाये जाते है, किन्तु यह किला जमीन के अन्दर जमीन की बराबर समतल बनाया गया है। केवल यमुना की ओर उसकी ऊंची उठी हुई दीर्घाकार दीवारें देखने में आती हैं। अंग्रेजों के

समय में यहाँ फौज रहती थी गोला बारूद फौजी साम
बनाने का कारखाना था। अतः जनता को इसमें जा
की आज्ञा नहीं दी जाती थी, केवल मेले के अवसर प
यात्री एक खास रास्ते से अन्दर की मूर्तियों को देख
जाने दिये जाते थे यहाँ जमीन के अन्दर गुफा में धर्म
राज अन्नपूर्णा, लक्ष्मी, गणेश, बालमुकन्द, शङ्कर, सत्य
नारायण, भैरव, ललिता, गङ्गाजी, कार्तिकेय, नृसिंह
सरस्वती, विष्णु, यमुना, दत्तात्रेय, मार्कण्डेय, गोरख
जामवन्त, सूर्यदेव, अनुसूया, वेदव्यास, वरुण, कुबेर
अग्नि, दुर्वासा, राम, लक्ष्मण, शेषनाग, यम, काल
आदि की अनेक प्राचीन और कलापूर्ण मूर्तियाँ हैं। यहां
अक्षयवट के दर्शन का बहुत भारी महात्म है यह वृक्ष
प्रलयकाल में प्रकट होता है और भगवान बालमुकन्द
के रूप में इसके पत्तों पर शयन करते है। प्रयाग का य
किला आगरे के अकबर बादशाह का बनाया हुआ
और कहते हैं कि उसी ने अपनी हिन्दू रानी के लि
इन मूर्तियों का निर्माण कराया था।

किले के नीचे बेंड़ी महावीर की बड़ी विशाल मूर्ति
है जो जमीन पर सीधे लेटे हुये हैं। इसके अलावा (१)
विन्दुमाधव भगवान का मन्दिर (२) वासुकी सर्पराज
का मन्दिर (३) शिव कचहरी (४) अलोपी देवी (५

भारद्वाज आश्रम (६) कल्याणी देवी देखने योग्य है।

आधुनिक वस्तुओं में यहाँ का प्रान्त भर का हाई-कोर्ट, खुसरूबाग, आनन्द भवन, हिन्दीसाहित्य सम्मेलन के भवन, हिन्दी विद्यापीठ, प्रयाग विश्वविद्यालय हिन्दुस्तानी एकेडेमी के भवन, कमला नेहरू अस्पताल, आजाद पार्क, प्रान्तीय सचिवालय के भवन आदि देखने चाहिये।

काशी की तरह प्रयाग भी प्रदेश भर की राजनैतिक साहित्यिक जाग्रति का केन्द्र है। यहाँके प्रमुख व्यक्तियों में नेहरू परिवार, मालवीय परिवार, पुरुषोत्तमदासजी टण्डन, तेजबहादुर सप्रू, कवियों में 'बिस्मिल' धीरेन्द्र वर्मा, महादेवी वर्मा, राजकुमार वर्मा, डा० रसाल आदि मुख्य हैं।

गोला गोकर्णनाथ

खीरी लखीमपुरसे २० कोस पर गोला गोकर्णनाथ स्टेशन है। यहाँ गोकर्णनाथ महादेव का विशाल मन्दिर है यहाँ फाल्गुन में शिवरात्रि पर और चैत्र में मेला जमा होता है जिसमें शिवभक्तशङ्कर पर गंगाजल चढ़ाने आते हैं। कहते हैं एकसमय रावण इन्द्रपुरीको जीतकर गोकर्णेश्वर शिव को लंकापुरी ले चला रास्ते में शङ्कर भगवान की इच्छा सुन्दर स्थान देखकर यहीं ठहर जाने की हुई

उन्होंने रावण की मति फेर दी वह उन्हें जमीन पर रख संध्या करने चला गया। संध्या करके आने के बाद उसने लाख यत्न किये लेकिन भोले बाबा टस से मस न हुए। रावण ने स्तुति की तो आप बोले 'रे भक्त' मैं अब यहाँ से नहीं उठ सकता यह स्थान मुझे प्रिय है तू यहीं मेरा पूजन कर तभी से यह स्थान प्रसिद्ध हो गया।

बिठूर

बिठूर ई० आर० पर स्टेशन हैं जहाँ कानपुर से गाड़ी जाती है बिठूर का पुराना नाम ब्रह्मवर्त है। शास्त्रों में ब्रह्मवर्त देश अत्यन्त पवित्र भूमि माना है। यह गंगा के किनारे पर स्थित है यहाँ पुरानी बस्ती ब्रह्मघाट के समीप है। यहाँ ब्रह्मवर्त की खूँटी के नाम से प्रसिद्ध एक मन्दिर है जहाँ घाट की सीढ़ियों पर एक फुट ऊँची लोहे की खूँटी गढ़ी हुई है। यहाँ के घाट रानी अहिल्याबाई और बाजीराव पेशवा के बनवाये हुए हैं यहाँ बालमीकेश्वर, चोरेश्वर, भूतेश्वर, कपिलेश्वर महादेव और पेशवाओं का दीप स्तम्भ दर्शनीय हैं यहाँ के आस पास के स्थानों में बरहट (बर्हिष्मतीपुर मनुजी का जन्म स्थान) ध्रुवटीला (ध्रुवजी का जन्म स्थान) बाल्मीकि आश्रम आप बाल्मीकि का जन्म स्थान और

आश्रम है यहीं बनमें परित्यक्त सीताके गर्भ से लव-कुश को जन्म हुआ। और उन्हें ऋषिने अमर महाकाव्य बाल-मीकि रामायण रचकर कंठस्थ कराया जिसे सुन राम स्तंभित से रह गये थे।

सन् १८५७ के सिपाही विद्रोह के कारण भी बिठूर का नाम बहुत प्रसिद्ध होगया है। बाजीराव पेशवा राज्य छिन जाने पर यहीं रहते थे। सिपाही विद्रोह के सूत्रधार महारानी लक्ष्मीबाई और बाजीराव ही थे और बाजी-राव के बेटे नाना साहब और पुत्री मैंना बाई ने अंग-रेजों के दाँत खट्टे करने में जो बहादुरी दिखाई और कानपुर के आस पास जो अंगरेजों की दुर्गति की गई उसका सारा श्रेय बिठूर निवास पीशवा परिवार को ही है। अतः राजनैतिक दृष्टि से भी बिठूर का महत्व कुछ कम नहीं है यहाँ पेशवाओंका बाड़ा अभी भी देखा जा सकता है जहाँ बैठकर उक्त विद्रोह की योजना संग-ठित की गई थी।

नैमिषारण्य मिश्रिक

नैमिषारण्य अत्यन्त प्राचीन तप और ज्ञान की भूमि है। पौराणिक काल में यहाँ हजारों ऋषि मुनि इकट्ठे होकर प्रसिद्ध कथा वाचक सूतजी शास्त्रों की अनेका-

नेक कथाय सुना करते थे। पुराणों में अनेक जगह कई प्रकार के प्रश्नोत्तरों के साथ कथायें वर्णित मिलती है। अनेक पुराण और शास्त्रों के ज्ञाता सूतजी बहुत बड़े विद्वान थे और वह अपनी कथाओं द्वारा शास्त्रीय ज्ञान का विस्तार अत्यन्त बृहद रूप में किया करते थे। नैमिषारण्य जाने के लिए हरदोई जिले में संडीला कस्बे से तथा बालामऊ होकर दो मार्ग हैं। संडीला से यह स्थान करीब १५ मील कच्चे मार्ग से जाना पड़ता है। एक रास्ता सीतापुर होते हुए भी जाता है। नैमिषारण्य एक छोटा सा स्टेशन है जहाँ से बस्ती १ मील के करीब पड़ी है। यहाँ का प्रसिद्ध तीर्थ 'चक्रतीर्थ' नाम का एक पक्का बना हुआ कुन्ड है इस कुंड के पास ही यात्रियों के ठहरने के लिये कई धर्मशालाये हैं। यहाँ आम बहुत पैदा होता है चारों ओर सघन जंगल है जिसके कारण यह स्थान अत्यन्त सुहावना और तपोवन जैसा ही प्रतीत होता है। यहाँ बस्ती में प्रायः पंडों के ही मकान हैं। छोटा सा बाजार है। कुंड में पानी गहरा होने के कारण लोहे की जाली लगाकर डूबने का बचाव कर दिया गया है। यहाँ के मुख्य मन्दिर हैं (१) ललिता देवी का मन्दिर (यहाँ ललिताम्बा देवी की बड़ी विशाल मूर्ति है) (२) भूतनाथ महादेव

(यह यहां के प्रसिद्ध देवता हैं) (३) सप्त ऋषियों का टीला (यहाँ सतयुग में सातों ऋषियों ने मिलकर बड़ा भारी यज्ञ किया था) (४) गोवर्धन महादेव (५) योगमाया देवी (६) विश्वनाथ अन्नपूर्णा जी (७) जानकी कुण्ड (८) लोलार्क कुण्ड (९) वेद व्यासजी का आश्रम (यहाँ व्यास गद्दी मनु महाराज और सतरूपा रानी के सिंहासन, व्यास गंगा ब्रह्मावर्त और गंगोत्री कुण्ड हैं जो अब मिट्टी से भर गये हैं।

(१०) गोमती नदी (स्नान का महात्म्य है) (११) पुष्कर सरोवर (१२) दशाश्वमेध घाट पर राम मन्दिर है (१३) पाण्डव किला (यहाँ कृष्ण का मन्दिर है जिसमें पाँचों पान्डवों के भी दर्शन हैं) (१४) बारह कूप (१५) सूत जी की व्यास गद्दी (१६) महावीर का टीला (यहाँ बहुत विशाल हनुमान जी की मूर्ति है कहते हैं इससे बड़ी मूर्ति हनुमान जी की हिन्दुस्तान भर में कहीं नहीं हैं।)

नैमिषारण्य में पितरों को पिंड दान करने का बड़ा महात्म्य है। यज्ञ दान जप होमादि यहाँ करनेसे अत्यन्त फल की प्राप्ति होती है। एक बार सब ऋषियों ने पितामह ब्रह्माजी से पूछा कि हे पितामह भारत भूखंड पर तपस्या के योग्य सब से उत्तम कौनसा प्रदेश है तो ब्रह्मा

ने अपना चक्र छोड़कर कहा इसके पीछे-पीछे चले जाओ जहाँ यह रुक जाय उसी भूमि को तप के लिये सर्व श्रेष्ठ समझ लेना। ब्रह्मदेव का चक्र चला और उसके पीछे चले ८४ हजार शौनकादि ऋषि गण यहाँ आकर चक्र का धुरा स्थिर हो गया। अतः ऋषियों ने इस स्थान को सर्वोपरि मान अनेक जप तप यज्ञादिक किये तभी से नेमि अर्थात् चक्र स्थिर होनेके कारण इसका नाम नेमिप बन पड़ गया है।

नेमिष से मिश्रिक ५ मील है। यह नेमिपकी बस्ती से आबादी बनावट आदि में बड़ा है। वहाँ के दर्शनीय स्थान हैं—

१—बाँकेबिहारी धर्मशाला और मन्दिर २—महावीर गुफा में नीची महावीर के दर्शन ३—सीता रसोई यहाँ महावीर की मूर्ति के पैरों तले अहिरावण पड़ा है ४—सीताकूप ५—दधीच कुण्ड, यह यहाँ का प्रधान तीर्थ है। प्रसिद्ध असुर वृत्तासुर जब किसी प्रकार न मरा तब इन्द्र ने दधीच ऋषि से वज्र बनाने को उनके शरीर की हड्डी माँगी, ऋषिने सम्पूर्ण लोकोंका उपकार विचार कर अपनी देह की हड्डी देना स्वीकार कर लिया और तब सम्पूर्ण तीर्थों का पानी मंगवा पवित्रता पूर्वक स्नान कर गौ से अपनी देह चटा कर प्राण विसर्जन कर दिये।

दधीच ऋषि के इस दुर्लभ सत्साहस की सम्पूर्ण लोक में अपार प्रशंसा हुई। दधीच की ही अस्थि वज्र के लिये क्यों ली गई इस विषय में सुना जाता है कि एक समय जब परशुराम जी तपस्या करने उत्तरा खण्ड को गये तो अपना वज्र बाण दधीच ऋषि को सुपुर्द कर गये और कहा यदि मेरा बाण तुम से खो गया तो तुम्हारा परम अनिष्ट होगा। हाँ तुम इसे चाहो तो अपने उपयोग में ले सकते हो। इसके बाद ऋषि वर्षों तक उनकी बाट देखते रहे, परन्तु परशुरामजी न लौटे चिन्तामें ऋषि बड़े बेचैन थे क्यों कि परशुराम के क्रोध को झेलने की किसकी सामर्थ है। अतः ऋषि ने और कुछ उपाय न देख उस बाण को घिसकर पी लिया इस वज्रशर के कारण ही उनकी हड्डियाँ वज्र से भी अधिक कठोर हो गईं। अनेक तीर्थों के पानी के मिश्रण के कारण ही इस स्थान का नाम मिश्रिक प्रसिद्ध हो गया। होली के दिन मिश्रिक की परिक्रमा भी लगाई जाती है।

हत्या हरण

मिश्रिक से दस मील पर हत्या हरण तीर्थ है। यहाँ पक्का पक्का कुन्ड है। रामचन्द्र जी को रावण का वध करने के कारण जो ब्रह्महत्या लगी उसे उन्होंने यहाँ

स्नान करके दूर की है। अतः हत्या का पातक दूर करने को दूर दूर से लोग यहाँ आते है। यहाँ भादों के महीने में बड़ा भारी मेला लगता है।

देवी पाटन

यह गोंड़ा जिले में बलरामपुर से ४ मील की दूरी पर है। यहाँ पाटेश्वरी देवी का मन्दिर है जहाँ नवरात्रि के दिनों में भारी मेला लगता है।

गढ़मुक्तेश्वर

गढ़मुक्तेश्वर को दिल्ली से गाड़ी जाती है। यहाँ गङ्गा का प्रसिद्ध तीर्थ है। पाँडवों के समय हस्तिनापुर और इन्द्रप्रस्थ का सारा राजपरिवार प्रति वर्ष यहाँ गङ्गा स्नान को बड़ी धूमधाम से जाता था। यह कार्तिक सुदी पूर्णिमा का गंगा स्नान का बड़ा भारी मेला होता है। गंगा के मेलाओं में यह मेला अपना खास स्थान रखता है यहाँ गङ्गा दशहरा बैशाखी पूर्णिमा, सोमवती अमावस, संक्रान्ति आदि पर्वों पर भी हजारों यात्री गंगा स्नानको आते हैं। मुक्तेश्वर शिवके दर्शन हैं। यहाँ किसी समय प्राचीन किला भी था जो अब नष्ट भ्रष्ट हो गया है। यहाँ से ५ मील आगे गंगा जी बूढ़ी गंगा नाम की नदी से मिली है।

सोरौं

सोरौं अर्थात् शूकर क्षेत्र बी. बी. सी. आई. की छोटी लाइन पर मथुरा से बरेली जाने वाली लाइन पर पड़ता है। यहाँ वाराह भगवान ने पृथ्वी उद्धार करके हिरन्याक्ष के वध के बाद अपना देह त्याग किया है। वाराह भगवानका जन्म पुष्कर में और प्राण त्याग सोरौं में हुआ है। यहाँ बस्ती से गंगा जी की धारा काफी दूर है अतः बैल गाड़ियों और इक्कों में वहाँ तक जाना पड़ता है। यहाँ वाराह भगवान के दर्शन हैं। हाड़ गंगा है जहां लोग अपने मृतक सम्बन्धियों की अस्थियाँ विसर्जन करते हैं। बस्ती से थोड़ी ही दूर पर भैरवनाथ का मन्दिर है जहाँ बच्चों के मुण्डन कराये जाते हैं।

राजघाट

अलीगढ़ बुलन्दशहर रोड पर यह स्थान है। यहाँ गंगा जी का घाट है जहाँ कार्तिक पूर्णिमाको भारी मेला भरा जाता है यहाँ कितने ही मन्दिर हैं। इनका असली नाम बलराम घाट है और इसे भगवान कृष्ण के बड़े भाई बलदेव जी ने प्रकट किया है।

राजघाट कर्णवास

सोरौं से आगे राजघाट स्टेशन है जहाँ गंगा के

किनारे सुन्दर घाट बना हुआ है। यह स्थान परम एकान्त और भजन ध्यान और शान्ति प्राप्ति करने की जगह है। कितने ही साधू महात्मा यहाँ रहकर भजन करते हैं। यहाँ गङ्गा के तट पर तपोभूमि की तरह के आश्रम हैं। शान्ति प्राप्त करने वालों को यहाँ निवास करनेका अच्छा सुअवसर है।

आगरा मथुरा से ३४ मील और देहली से १२२ मील की दूरी पर यमुना नदी के किनारे १ प्रसिद्ध व बादशाही समयका नगर है। व्यापारकी बड़ी मन्डी है। यहाँ ताज बीबी का रोजा, मकबरा, इतमाद्दौला, सिकन्दरा और कैलाश, तथा किला देखने योग्य स्थान है। फतहपुर सीकरी यहाँ से २४ मील दूर प्रसिद्ध दरगाह है। यहाँ जी. आई. पी., ई. आई. आर. और बी. बी. एण्ड सी. आई. की लाइन आकर मिली है।

कानपुर—व्यापारकी बड़ी भारी मन्डी, चमड़े और कपड़ा व अन्य उद्योग धन्धों का प्रसिद्ध नगर है। ई० आई. आर. और बी. बी. एण्ड सी. आई का जंकशन है। यहीं से लखनऊ को गाड़ी जाती है।

लखनऊ—कानपुर से ४५ मील दूर गोमती नदी के किनारे कई खण्डों में बसा हुआ बड़ा नगर है। यही प्रान्तीय सरकार की राजधानी है। अवध के नवाबों की

भी राजधानी रहने का इसे ही सौभाग्य प्राप्त रहा है। अमीनाबाद पार्क इमामबाड़ा, छतर, मन्जिल, सेक्रेटेरियेट और अजायब घर आदि देखने योग्य स्थान हैं।

मथुरा—ब्रज भूमि का केन्द्र है देहलीसे ८८ मील दूर इसका विस्तृत वर्णन मय ब्रज भूमि के अन्य स्थानों के पुस्तक के अन्त में देखें।

—*—

द्वादश ज्योतिर्लिंग

सौराष्ट्रे सोम नाथंच श्री शैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिनां महाकाल मोंकार ममलेश्वरम् ॥
परल्यां वैजनाथंच डकिन्यां भीम शंकरम्।
सेतु बन्धुते रामेशं नागेशं दारुका वने ॥
वाराणास्यपोंतु विश्वेश त्र्यंम्बकं गौमती तटे।
हिमालयेतु केदारं घृष्णेसंच शिवालये ॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्म कृतं पाप स्मरणेन विनश्यति ॥

एक समय ब्रह्माजी और विष्णु भगवान में मुझसे बड़े होने का झगड़ा चला। उस समय लिंग रूप एक ज्वाला (ज्योति) प्रकट हुई। ब्रह्मा ने उसके [illegible] के भाग का पता लगाने के लिये हंस का रूप [illegible] [illegible]

और श्री विष्णु ने नीचे के भागका पता लगाने के लिए बारहा रूप धारण किया । ब्रह्मा और विष्णु को बहुत प्रयत्न करने पर भी जब उस लिंग के अन्त का पता नहीं लगा—उस ज्वाला लिंग से सब ब्रह्माण्ड व्याप्त हो गया तब दोनों ने हार मानकर शिवजी को ही सबसे बड़ा होना स्वीकार किया तभी से लिंग रूप में शिवजी की पूजा प्रारम्भ हुई ।

प्राचीन समय में शिव भक्तों ने जिस किसी स्थान पर तपस्या करके भक्ति द्वारा लिंग रूप में संसार व्यापिनी ज्योति का अनुभव किया, वहाँ ज्योतिर्लिंग की स्थापना हो गई और उन्हीं भक्तों की तपस्या के कारण वह स्थान भी पवित्र माना जाने लगा। शिव पुराण के अनुसार भारत में बारह ज्योतिर्लिंग माने गये हैं । जो इस तरह से हैं ।

सौराष्ट्र देशमें सोमनाथ, श्री शैल पर्वत पर मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकालेश्वर, ओंकार में अमलेश्वर, परली में बैजनाथ, डाकिनी में भीमशंकर, सेतुबन्ध के पास रामेश्वर, दारुका वनमें नागेश, काशीमें विश्वनाथ गोदावरी के किनारे त्र्यम्बकेश्वर, हिमालयमें केदारनाथ और शिवालय में घृष्णेश्वर—नामक बारह ज्योति लिंग हैं । इन बारह ज्योतिर्लिंगों का संक्षिप्त वर्णन कथा तथा

महात्म्य सहित यात्रा की सुविधा के अनुसार एक विशेष रूप से दिया जाता है ।

इन द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा का प्रारम्भ तीर्थ-राज प्रयाग से ही किया जाता है। प्रयाग से सबसे नज-दीक ज्योतिर्लिंग विश्वनाथजी का काशी में है। प्रयाग से काशी उत्तर रेलवे लाइन से जाने वाले को मुगल सराय में गाड़ी बदलनी पड़ती है। प्रयाग से एक गाड़ी फाफामऊ जंकशन होती हुई सीधे काशी को जाती है। प्रयाग से एन. ई. रेलवे की छोटी लाइन भी बनारस होकर कटिहार तक गई है।

काशी द्वादश ज्योतिर्लिंगों में हैं। इस नगरी का विशेष वर्णन व महातम अन्यत्र छपा है, उसमें देखें।

काशी से आगे बढ़ने पर वैद्यनाथ धाम—नामक स्थान में रावणेश्वर वैद्यनाथ—ज्योतिर्लिंग का दर्शन होता है। कुछ सज्जन, हैदराबाद राज्य के "परली" नामक नगर में जो वैजनाथ जी का लिंग है उसे ही ज्योतिर्लिंग मानते है। शिवपुराण के आधार पर तो वैद्य नाथ धाम में ही ज्योतिर्लिंग होना चाहिए और इस माहात्म्य के आदि में जो श्लोक दिया गया है उसके आधार पर उसे परली नगर होना चाहिये। यहाँ हम दोनों ही स्थान के ज्योतिर्लिंगों का वर्णन करते हैं।

काशी से मुगलसराय गाड़ी बदल कर कलकत्ते की तरफ को ई. आर. की गाड़ी पर सवार होने से 'जसडीह' नामक स्टेशन पर गाड़ी बदल कर शाखा लाइनसे थोड़ी दूर जाने पर वैद्यनाथ नामक स्टेशन मिलता है। वहाँ से थोड़ी दूर पर एक सुन्दर तालाब है जिस पर पक्के घाट भी बने हुए हैं इसी तालाब के पास एक धर्मशाला भी है। इस सरोवर से थोड़ी दूर पर श्री वैद्यनाथ जी का प्रसिद्ध मन्दिर है। राक्षस राजा रावण भगवान शंकरका बड़ा भक्त था, उसने लंका में शिव लिंग स्थापित करने का निश्चय किया, कैलाश में शिवजीको प्रसन्नकर वह वहाँ से एक लिंगमूर्ति अपने साथ लेआया। रास्ते में लघु-शंका निवारण करने के लिये उसने उस मूर्ति को एक अहीर को अपने हाथ में थोड़े समय के लिये रखते रहने को दे दिया। जब कुछ समय तक रावण नहीं आया तो अहीर ने उस मूर्ति को वहीं जमीन पर रख दिया, रावण ने उस मूर्ति को वहाँ से उठा लेने की बहुत सी कोशिश की परन्तु वह इस कार्य मे सफल नहीं हुआ।

अन्त में उसने उस लिंग मूर्ति की वहीं विधिवत पूजा की। तभी से रावणेश्वर वैद्यनाथ के नाम से वह ज्योतिर्लिंग प्रख्यात हुआ कहते हैं इस लिंग के दर्शन

जन से पाप दूर होते हैं और मनकी सब कामनायें पूर्ण होती हैं।

इसके बाद यात्री को रामेश्वर ही पहुँचना चाहिए, रामेश्वर जाने के लिए यात्री यदि चाहे तो जसडिह से सीधा कलकत्ते जाकर श्रीजगन्नाथपुरी होता हुआ मद-रास पहुँचे और फिर वहीं से दक्षिण रेलवे द्वारा सीधा रामेश्वर पहुँच जाय, रास्ते में उसे अन्य कई तीर्थ जैसे शिव काँची, कुम्भ कोनम्, चिदाँवरम्, श्रीरंगम् मदुरा इत्यादि रामेश्वर-नगर स्टेशन से करीब १ मील की दूरी पर बसा हुआ है, यहाँ पर समुद्र किनारे श्री रामेश्वरजी का विशाल मन्दिर है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी ने सेत के बँध जाने पर यहाँ शिवलिंग की स्थापना की थी, श्री रामेश्वर के दर्शन और पूजन का बड़ा महात्म्य है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस सम्बन्ध में लिखा है :—

जे रामेश्वर दर्शन करहीं, बिनु श्रम भवसागर तरहीं।
जे गंगाजल आनि चढ़ावहीं, ते सायुज्य मुक्तिनर पावहिं॥

द्वादश ज्योतिर्लिंगों में केवल रामेश्वर ज्योतिर्लिंग ही ऐसा है जहाँ पर यात्रीगण भीतर जाकर अपने हाथ से शिवजी की पूजा नहीं कर सकते, मन्दिर के नियम

के अनुसार दूर ही से यात्रियोंको दर्शन कराया जाता है और कर देने पर पुजारी द्वारा गङ्गाजल चढ़ाया जाता है, मन्दिर के अन्दर नन्दी की विशाल मूर्ति है। शङ्कर जी और पर्वतीजी की चल मूर्तियाँ हैं जिनकी उत्सवों के समय में भिन्न-भिन्न वाहनों पर सवारी निकाली जाती हैं, मन्दिर के अन्दर सोने और चाँदी के कई तरह के तथा एक चाँदी का सुन्दर रथ भी है। रामेश्वर से १० १२ मील की दूरी पर धनुष कोटि-नामक सुन्दर स्थान है। यहाँ पर दो समुद्रों का मेल हुआ है।

रामेश्वर से दक्षिण रेलवे द्वारा वापिस लौटने पर सबसे पहिले मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग मिलता है, यह लिंग श्री शैल पर्वत पर है, यह स्थान दक्षिणका कैलाश नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ पहुँचना बहुत कठिन है, रास्ता जंगल में होकर गया है। इस जंगल में गोंड, भील, कोरकु आदि जातियों के लोग रहते हैं जो यात्रियों को प्रायः लूट लेते हैं। जंगल समाप्त होने पर करीब १० मील की पहाड़ पर चढ़ाई और उतराई है, प्रतिवर्ष केवल महाशिवरात्रि के समय यात्रियों को सुविधा पूर्वक पहुँचानेका प्रबन्ध सरकार द्वारा किया जाता है। उस समय मार्ग में तथा जंगल में पुलिस का पूरा इन्तजाम किया जाता है जिससे कोई यात्री लुट न जाय, पर्वत पर और

मार्ग मे उस समय जल आदि का भी प्रबन्ध किया जाता है।

श्री मल्लिकार्जुन पहुँचने के लिये यात्रियों को महाशिवरात्रि के दो तीन दिन पहले मद्रास प्राँत के करनूल नामक स्टेशन पर पहुँच जाना चाहिये। रामेश्वर से मद्रास होकर बम्बई की तरफ आते समय दक्षिण रेलवे लाइन पर गुंटकल एक जंकशन है। इस जंकशन से एक छोटी रेल द्रोणाचलम् स्टेशन को गई है। उस द्रोणाचलम् स्टेशन से निजाम राज्य की रेलवे लाइन आरम्भ होती है जो सिकन्दराबाद, हैदराबाद होती हुई सेन्ट्रल रेलवे के मनमाड़ स्टेशन को मिलाती है। करनूल से ४४ मील आत्माकूर तक मोटर जाती है। आत्माकूर से ३० मील पेचखू ३० मील जंगल होकर खराब रास्ते से जाना होता है, इस रास्ते पर बैलगाड़ियाँ ही अधिक चलती हैं। पेचखू से श्री शैल पर्वत को चढ़ाई आरम्भ होती है। वहाँ पर सामान उठाने के लिये कुली मिल जाते हैं। डोली का भी प्रबन्ध हो जाता है पेचखू से थोड़ी दूर ऊपर चढ़ने पर एक जंगली सरदार प्रत्येक यात्री से अपना कर वसूल करता है। चढ़ाई का रास्ता साफ है। कहीं-कहीं पर सीढ़ियाँ भी बनी हुई हैं रास्ते में पानी बहुत कम

स्थानोंमें मिलता है, इसलिये यात्री आत्माकूर या पेचरु से अपने साथ स्वच्छ जल ले जाते हैं। करीब ५ मील की साधारण चढ़ाई पर एक छोटे से झरनेमें जल मिलता है और थोड़ी दूर से उतार लग जाता है। उतार खतम होने पर भीमतोला कुण्ड मिलता है जिसमें बरसाती जल इकट्ठा किया जाता है। यहाँ एक शिवजीका मन्दिरभी है। भीम-तोला से ३ मीलकी कड़ी चढ़ाई आरम्भ होती है। चढ़ाई तीन पहाड़ों की है जा एक साथ नहीं दिखाई देती। चढ़ाई समाप्त होकर १ मील आगे श्री मल्लिकार्जुन के दर्शन होते हैं। महाशिवरात्रि पर यहाँ काफी जनसमूह हो जाता है। इस पर्वत पर एक तालाब में बरसातका जल इकट्ठा कर इन्जनसे नली द्वारा पक्के हौजों में लाया जाता है और यही जल व्यवहारमें लाया जाता है मन्दिर के अन्दर भी एक जल कुण्ड है। मंदिर काफी बड़ा है। पास ही में श्री पार्वतीजी (जिन्हें यहाँ "भ्रमराँबा" कहते हैं) का भी मन्दिर है। दोनों मन्दिरों के दर्शनों का कुछ कर भी देना पड़ता है।

मल्लिकार्जुन के सम्बन्ध में जो कथा शिव-पुराणमें दी हुई है वह संक्षेपमें इस प्रकार है—एक समय भगवान शिवजी और पार्वती जी ने यह निश्चय किया कि उनके दोनों पुत्र स्वामीकार्तिक और गणेशजी मेंसे उनका विवाह

पहले किया जावेगा, जो पृथ्वी की परिक्रमा सबसे पहिले कर आवे, स्वामिकार्तिक उसी समय चले गये। पेट बहुत बड़ा होने के कारण गणेशजी के लिये यह काम कठिन हो गया और उन्होंने श्री शिवजी की प्रदक्षिणा कर दी और कहा कि आप जगत के स्वामी और विश्वरूप हैं, आपकी प्रदक्षिणा कर देने से विश्व की प्रदक्षिणा होगई इस बात को मानकर श्री गणेशजी का विवाह सर्व-प्रथम कर दिया गया। कई वर्षों के बाद जब स्वामिकार्तिक पृथ्वी प्रदक्षिणा करके लौटे, तो उनको श्री गणेशजी के विवाह समाचार सुन आश्चर्य और क्षोभ हुआ। वह दक्षिण में क्रौंच पर्वत पर चले गये। शिवजी पार्वती सहित क्रौंच पर्वत पर अपने पुत्र स्वामिकार्तिक से मिलने गये, माता पिता का आगमन मालूम कर वह क्रौंच पर्वत से कई मील दूर दूसरे पर्वत पर चले गये। क्रौंच पर्वत पर जाकर भगवान शिव ज्योतिस्वरूप लिंग के रूपमें हो गये। तभी से वह श्री मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के नाम से प्रसिद्ध हुये।

श्रीशैलपर्वत की दूसरी तरफ नीचे कृष्णानदी बहती है। उसको वहाँ पर लोग पातालगङ्गा कहते हैं। इस कृष्णानदी के स्नान करने को ८०० सीढ़ियाँ उतरनी

और चढ़नी पड़ती हैं। महाशिवरात्रि के दूसरे दिन उसी पहले वाले रास्ते ही वापिस करनूल पहुँच जाते हैं।

इसके बाद हैदराबाद राज्य में नागनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन होते हैं निजाम राज्यकी रेलवे के चौढ़ी नामक स्टेशन पर उतरना पड़ता है, द्रोणाचलम्मे मनमाड़ तक जो निजाम राज्य की रेलगाढ़ी गई है, उस पर "पूर्णा" नाम का एक जंकशन है यहाँ से हिंगोली तक इसी रेल की एक शाखा गई है। चौढ़ी स्टेशन इसी चूर्णा हिंगोली शाखा पर है, नागनाथका मन्दिर "ओंडा नामक गाँव में है जो स्टेशन से १२ मील पड़ता है स्टेशन पर बैलगाड़ी और मोटरें भी मिल जाती हैं, ओंडा गाँवके चारों ओर पहाड़ी ओर घने जंगल हैं, नागनाथ जी का मन्दिर काफी बड़ा है, मन्दिर के ऊपर का भाग नया मालूम होता है लेकिन नीचे का भाग बहुत पुराना है और उस पर बहुत ही सुन्दर कारीगरी की गई है श्री नागनाथ ज्योतिर्लिंग मन्दिर के नीचे भाग में अँधेरी कोठरी में है, इस कोठरी की ऊँचाई बहुत कम है। जिनमें मनुष्य खड़ा नहीं हो सकता, मन्दिर के पास एक पानी का कुण्ड है जो सभी तरह उपयोग में आता है, थोड़ी दूर पर श्री कनकेश्वरी (पार्वती) देवी का छोटा मन्दिर है। एक समय परम शिवभक्त वैश्य ने भगवान

शङ्कर की विश्व-व्यापिनी ज्योति का अनुभव किया और तभी से वह यहाँ नागनाथ ज्योतिर्लिंग के नाम से प्रसिद्ध हुए। कुछलोगोंका मत हैकि नागनाथ ज्योतिर्लिङ्ग द्वारिकापुरीके पास समुद्रसे थोड़ी दूरपर है। हैदराबाद राज्य में नहीं। शिवपुराणमें दी हुई कथाके आधार पर भी इस ज्योतिर्लिङ्ग का समुद्र से थोड़ी दूर पर होना पाया जाता है इसलिए उसका भी वर्णन आगे किया जा रहा है।

हैदराबाद राज्य में दूसरा ज्योतिर्लिङ्ग परली वैजनाथ है। निजाम राज्य की रेलवे के पूर्ण जँक्शन से आगे मनमाड़ की तरफ परभनी एक जङ्क्शन है। परभनी से परली तक उसी रेलकी एक शाखा गई है। इसी परली स्टेशन से थोड़ी दूर परली ग्रामके पास वैजनाथ ज्योतिर्लिङ्ग है। मन्दिर बहुत पुराना है। उसका जीर्णोद्धार इन्दौर की सुप्रसिद्ध रानी अहिल्याबाई ने किया था। मन्दिर के पास ही एक पक्का तालाब है ज्योतिर्लिङ्ग काले पाषाण का है मन्दिर एक छोटी-पहाड़ी पर है इसी पहाड़ीकी परिक्रमा भी की जाती है। नीचेसे मंदिर तक पहुँचने के लिए दो तरफ पक्की सीढ़ियाँ हैं। वैजनाथजी के मन्दिर के पास बालाजी का मन्दिर और कई मठ हैं जहाँ पर यात्री आसानी से ठहर सकते हैं।

हैदराबाद राज्य में तीसरा ज्योतिर्लिंग घृणेश्वर है परभनी जंकशन से निजाम राज्य की रेल द्वारा मनमाड़ की तरफ आगे बढ़ने पर दौलताबाद नामक स्टेशन आता है इस स्टेशन से १२ मील की दूरी पर वेरलू गाँव के पास श्री घृणेश्वर ज्योर्तिलग है। दौलताबाद स्टेशन पर बैलगाड़ियाँ मिल जाती हैं। यदि मोटर से जाना हो तो औरङ्गाबाद स्टेशन पर उतरना चाहिए। दौलताबाद स्टेशन से वेरूल गाँव तक जाने में पहाड़ी के ऊपर होकर जाना पड़ता है और रास्ते में दौलताबाद का किला और अजन्ता तथा इलोरा की सुप्रसिद्ध गुफायें मिलती हैं। इलोरा में कैलाश नामक गुफा सबसे श्रेष्ठ और सुन्दर है पहाड़ की चट्टानों को काटकर एक विशाल मन्दिर बनाया गया है जिसमें शिवजी की मूर्ति है, इसी मन्दिर को कैलाश कहते हैं। इलोरा की कुछ गुफायें बौद्धकाल और कुछ गुफाय जनकाल की हैं। इन गुफाओं से एक मील की दूरी पर श्रीकृष्णेश्वरजी का मन्दिर है। मन्दिर की कारीगरी बहुत अच्छी है, ऊपरी भाग में विष्णु के दस अवतारों की मूर्तियाँ हैं। इस मन्दिर को श्रीमती गौतमाबाई होल्कर ने बनवाया था। मन्दिर से थोड़ी दूर पर एक सुन्दर पक्का तालाब है। इस तालाब को शिवालय भी कहते हैं। इसे इन्दौर की महारानी

अहिल्याबाईने बनवाया था। इस तालाब से थोड़ी दूर पर वेरूल ग्राम है।

जिस स्थान पर घृष्णेश्वर का मन्दिर है वहाँ पहले भक्त घुश्मादेवी अपने पति सहित शिवजी की पूजा किया करती थी। घुश्मा जब अपनी सौत द्वारा अपने पुत्र के मारे जाने पर भी शिवजी की पूजा से विचलित नहीं हुई तब भगवान शङ्कर ने दर्शन देकर उसके मृत पुत्र को जला दिया और लिंग के रूप में यहाँ सदा स्थित रहने का वरदान दिया। तब से वह लिंग घुश्मेश्वर अथवा घृष्णेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुआ।

घृष्णेश्वर के बाद यात्री को त्र्यंम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने चाहिए। दौलताबाद से निज़ाम राज्य की रेलवे से मनमाड़ पहुँचना चाहिये। वहाँ से सैन्ट्रल रेलवे द्वारा बम्बई की तरफ आगे बढ़ने पर नासिक रोड स्टेशन मिलता है। नासिक स्टेशन से त्र्यंम्बकेश्वर करीब १८ मील है। नासिक में त्र्यंम्बकेश्वर के लिये बैलगाड़ी और मोटरें भी मिल जाती हैं। त्र्यंम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग का दर्शन स्त्रियों को नहीं करने दिया जाता। वे केवल मुकुट का दर्शन कर सकती हैं। मन्दिर के अन्दर एक छोटे से गड्ढे में तीन छोटे से लिंग हैं जो क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और शिव के रूप माने जाते

हैं। महर्षि गौतम और अहिल्या ने इस स्थान में बहुत तप किया और शिवजी की आराधना की। भगवान् शङ्कर की कृपा से गौतम ऋषि के स्थान पर गोदावरी (गङ्गा) निकली शिवजी ने यहाँ लिंग रूप में सदा स्थित रहना भी स्वीकार किया, तभी से वह यह त्र्यंम्ब-केश्वर ज्योर्तिलिंग नाम से प्रसिद्ध हुए।

त्र्यंम्बकेश्वर के बाद पूने से ७५ मील की दूरी पर भीमशङ्कर ज्योर्तिलिंग हैं। त्र्यंम्बकेश्वरसे नासिक वापिस आने पर सैन्ट्रल रेलवेसे कल्याण होते हुये पूना आसानी से पहुँचा जा सकता है। पूने से भीमशङ्कर के लिये मोटर मिल सकती है जो भीमशङ्कर मन्दिरके पास तक गई है। घोड़े गाँव से पहाड़ की मामूली चढ़ाई आरम्भ होकर भीमशङ्कर पहाड़ तक गई है जिसकी ऊँचाई ३४४६ फीट है भीमशङ्कर की मूर्ति में से थोड़ा जल निकलकर भीमा नदी यहीं से पैदा हो जाती है। मंदिर के पास ही दो कुण्ड हैं। यह मन्दिर सुप्रसिद्ध महाराष्ट्र-राजनीतिज्ञ नाना फड़नवीस का बनाया हुआ है। मन्दिर के आस पास छोटी सी बस्ती है। यहाँ के लोग कहते हैं कि जब महादेवजी ने त्रिपुरासुर का वध करके कुछ समय के लिये यहाँ विश्राम किया उस समय अवध का 'भीमक' नामक एक सूर्यवन्शी राजा यहाँ

स्या करता था। महादेवजी ने प्रसन्न होकर उसको
ान दिये और तभी से भीमशङ्कर नाम से यहाँ का
ोतिर्लिंग प्रख्यात हुआ। शिव पुराण की कथा के
धार पर कुछ लोग भीमशङ्कर के ज्योतिर्लिंग को
साम प्रान्त के कामरूप जिले में गोहाटी के पास
ापुर पहाड़ी पर बतलाते हैं। लेखक को यह स्थान
ने का अभी सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ।

भीमशंकर से पूने लौटकर यात्री को सौराष्ट्र देशमें
मनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने चाहिये। पूने से
हल रेलवे द्वारा बम्बई पहुँचने पर वहाँ से सोमनाथ
ने के लिये दो मार्ग हैं—एक तो जहाज द्वारा दूसरा
द्वारा। बरसात के दिनों को छोड़कर अन्य समय
म्बई से छोटे जहाज वेरावला (सोमनाथ) पोर-
र (सुदामा पुरी) द्वारिकापुरी और ओखा बन्दरगाह
अक्सर जाते हैं। इन्हीं जहाजों द्वारा सोमनाथ
आसानी से पहुँचा जा सकता है जो यात्री रेल से
ना चाहें उनको बम्बई में वेस्टर्न रेलवे की गाड़ी में
ार होना चाहिये। बड़ौदा, अहमदाबाद होते हुये
मगाम स्टेशन पर गाड़ी बदलकर राजकोट होते हुये
मगाम स्टेशन पर गाड़ी बदलकर राजकोट तक
ी गाड़ी से जाकर तीसरी गाड़ी द्वारा जगलेसर
ान होकर [illegible] र उतर जावे यहाँ पर

सोमनाथ का मन्दिर २ मील है। मन्दिर से थोड़ी
पर बस्ती है। सोमनाथ जूनागढ़ राज्य में है। सोमन
जी के सुप्रसिद्ध मन्दिर को मुसलमानों ने नष्ट कर डा
था। मन्दिर के टूटे भाग अब भी समुद्र के किनारे मौज
हैं, जो इस मन्दिर के प्राचीन गौरव का स्मरण दिल
हैं। श्री सोमनाथजी के वर्तमान मन्दिर को इन्दौर
सुप्रसिद्ध रानी अहिल्याबाई ने बनवाया था।

सोमनाथसे यात्री द्वारका पहुंचकर नागेश्वर ज्योति
लिंग के दर्शन करते हैं। सोमनाथ से द्वारका जाने
लिए जगेलसर होते हुए वेस्टर्न रेलवे द्वारा राजको
होकर जामनगर होता हुआ द्वारकापुरी जाना चाहिए
द्वारकापुरी से नागेश्वर का मन्दिर १२ मील है।

नागेश्वर के बाद यात्री को उज्जैन आकर महा
कालेश्वर के दर्शन करने चाहिये, नागेश्वर से द्वारकापु
तक बैलगाड़ी या मोटर से आना होता है। द्वारकापु
से वीरमगाम तक रेल द्वारा जाना चाहिए, वीरमगाम
रेल द्वारा उज्जैन जाने के दो मार्ग हैं, एक तो अजमे
होता हुआ और दूसरा डाकोर जी होता हुआ
अजमेर की तरफ से आने में एक लाभ यह है कि रास
में सिद्धपुर (मातृगया) अजमेर (पुष्कर राज) श्री
नाथद्वारे जाने का भी सुअवसर मिल जाता है। वीरम

... ...ना होकर अजमेर में गाड़ी बदल कर
...लाम में भी गाड़ी बदलनी पड़ती है, उज्जैन से
...टर्न रेलवे और सेन्ट्रल रेलवे का मेल हुआ है।
...ट्रल रेलवे की लाइन भोपाल से आती है, उज्जैन
...ालियर राज्य में एक बड़ा नगर है। जब सिंह राशि
... बृहस्पति आते हैं तब प्रति बारहवें वर्ष सिंहस्थ का
...ा मेला होता है, लाखों यात्री और साधु-सन्यासी उस
...मय यहाँ आते हैं, यह नगर क्षिप्रा नदी के किनारे
...ा हुआ है। नदी के किनारे पक्के घाट बने हुए हैं,
... महाकालेश्वर का मन्दिर क्षिप्रा से थोड़ी दूर पर है।
...न्दर के नीचे के भाग में श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग
... ऊपर के भाग में श्री ओंकारेश्वर की मूर्ति है।
...न्दर के पास ही एक तालाब है, प्रातःकाल प्रतिदिन
महाकालेश्वर जी को चिता भस्म लगाया जाता है।
...ा पूजा और आरती होती है। उस समय का दर्शन
...श्य करना चाहिए यहाँ पर बालक श्रीकर गोप की
...क से प्रसन्न होकर भगवान शिव ज्योतिर्लिंग रूप में
...ट हुए, तभी से यह स्थान प्रसिद्ध तीर्थ माना जाने
...ा, श्री महाकालेश्वर से दक्षिण में ओंकार मान्धाता
...न में अमलेश्वर और ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग है।
...ैन से ओंकार मान्धाता आने के लिये यात्री को

वेस्टन रेलवे की छोटी लाइन की गाड़ी में बैठना चाहिये। यह गाड़ी इन्दौर तक सीधी जाती है। इन्दौर में उस गाड़ी पर सवार होना चाहिये जो अजमेर से खण्डवे की तरफ जाने के लिये आती है। इस लाइन पर मोटर का एक स्टेशन है। श्री ओंकारेश्वर के लिये इसी स्टेशन पर उतर कर ७ मील ओंकार मान्धाता को बैलगाड़ी और मोटर मिल जाती है। मान्धाता में एक पहाड़ी है वहाँ श्री नर्मदा जी की दो धारायें हो गई हैं, एक धारा पहाड़ी के उत्तर से और दूसरी पहाड़ी के दक्षिण से बहती है, आगे दोनों मिल जाती है, बीच में पहाड़ी का एक टापू बन गया है। इसी पहाड़ी पर ओंकारेश्वर का सुप्रसिद्ध मन्दिर है और दक्षिण धाराके दोनों तरफ बस्ती हैं, श्री नर्मदा जी की प्रधान धारा पहाड़ी के दक्षिण में है. इस धारा को नाव द्वारा पार करना पड़ता है। नाव से दोनों तरफ का दृश्य बहुत ही सुन्दर मालुम होता है, नर्मदाजी के पक्के घाट बने हुए हैं। श्री ओंकारेश्वरलिंग के चारों तरफ हमेशा जल भरा रहता है, कुछ लोग उस पहाड़ी को जिस पर ओंकारेश्वर का मन्दिर है ओंकार का मानते हैं और परिक्रमा करते है, परिक्रमामें कई मन्दिर मिलते हैं। यात्रियों को रात्रिकी शयन आरती के दर्शन

ावश्य करना चाहिये, नर्मदाजी के दक्षिण किनारे की ास्ती में अमलेश्वर का मन्दिर है। अमलेश्वर ही ज्यो- र्तिलिंग माने जाते हैं। यहाँ पर सूर्यवंशके सुप्रसिद्ध राजा ान्धाता ने तपस्या करके भगवान शंकर को प्रसन्न किया था तभी से इस स्थान का नाम मान्धाता पड़ा और भगवान् शिव अमलेश्वर ज्योतिर्लिंग नाम से प्रख्यात हुए। शिव पुराणमें ओंकारेश्वर और अमलेश्वर दोनों के दर्शन और पूजन का बहुत महात्म्य वर्णित है। इस लेख में दिये हुए क्रम से अब केवल केदारनाथ का दर्शन ही शेष रह जाता है। ओंकारेश्वर से केदार- नाथ पहुँचने के लिये यात्री को रेल द्वारा हरिद्वार और ऋषिकेश पहुँचना आवश्यक है। मोटर के स्टेशन से ऋषिकेश आने के लिये दो मार्ग हैं, एक तो वेस्टर्न रेलवे द्वारा रतलाम, दिल्ली होकर सहारनपुर, लक्सर और हरिद्वार होता हुआ ऋषिकेश आता है। दूसरा सेन्ट्रल रेलवे द्वारा खन्डवा, मथुरा दिल्ली होकर ऋषि- केश में ही उत्तराखण्ड की यात्रा के लिये चढ़ाई शुरू होती है, जिसका विस्तृत वर्णन व नक्शा पिछले पृष्ठों पर लगा है।

द्वारका

भगवान कृष्ण ने जब कंस को मार दिया तब

जरासंध की दोनों लड़कियाँ अस्ति और प्राप्ति अपने पिता को श्रीकृष्ण के विरुद्ध भड़काने लगीं, पुत्रियों के दुःख से दुःखित जरासंध ने मथुरा पर १७ बार आक्रमण किये, पर निष्फल हुए। लेकिन कंस की औरतों को चैन कहां। उन्होंने अपने पिता जरासंध के पास मगध जाकर रो-रोकर अठारहवीं बार बड़ी भारी सैना लेकर मथुरा पर चढ़ाई करदी। यादव पिछली लड़ाईयों से बहुत घायल थे, इसलिये भगवान् श्रीकृष्ण समस्त यादवों को लेकर द्वारिकापुरी चले गये, द्वारिकापुरी पश्चिमी सागर के तट पर कच्छ प्रदेश बड़ौदा राज्य में है। उत्तर से जाने वाले यात्री दिल्ली, फुलेरा, अजमेर, आबूरोड, वीरमगाम होते हुए द्वारिका जाते हैं, उत्तर प्रदेश से जाने वाले यात्री या तो मथुरा, भरतपुर, कोटा, रतलाम, अहमदाबाद, वीरमगाम होकर जामनगर जाते हैं या प्रयाग से जबलपुर होकर अहमदाबाद जाते हैं बिहार बंगाल और मध्य प्रदेशके यात्री नागपुर होकर अहमदाबाद जाते हैं, दक्षिण मद्रास से आने वाले यात्री पहले बम्बई आते हैं, बादमें वहाँसे या तो जहाज से चढ़कर डेढ़ मील छोटी नाव द्वारा द्वारिका जाते हैं, या बड़ौदा अहमदाबाद होकर जाते हैं, स्टेशन से द्वारिका सिर्फ १ मील है जिसे गोमती द्वारिका कहते हैं, मोटर तांगे

सभी हर वक्त मिल जाते हैं, ठहरने को बहुत सी धर्मशाला तथा पण्डों के मकानात हैं द्वारिका तीन हैं गोमती द्वारिका, मूलद्वारिका, बेटद्वारिका, गोमती द्वारिकाके पास गोमती गङ्गासागर में मिली है यहाँ १२ घाट पक्के बने हुए हैं। १ शङ्खघाट २ नारायण घाट ३ वसुदेव घाट ४ गऊघाट ५ पार्वती घट ६ पाण्डव घाट ७ ब्रह्मा घाट ८ सुरधन घाट ९ सरकारी घाट १० गंगा घाट ११ हनुमान घाट १२ नारायण बलीघाट, पास में निष्पाप कुण्ड है। अभी यहाँ कर नहीं लिया जाता है। कहते है कि निष्पाप कुण्ड और गोमती स्नान किये बिना यात्रा निष्फल है। रणछोड़जी का मन्दिर, नदी से छप्पन सीढ़ी चढ़कर मिलता है, मन्दिर की ऊँचाई १७५ फीट है जो सात मंजिला है भगवान की ३ फीट ऊँची चतुर्भुजी मूर्ति है जो सोनेके मुकुट मालाओं से सुन्दर विराजमान हैं।

बेट द्वारिका और गोपी तालाब

बेट द्वारिका गोमती द्वारिकासे २० मील दूर पड़ता है। वहाँ जाने के लिये दो मार्ग हैं, एक गाड़ीसे दूसरा मोटर से मोटर समुद्रका ज्वार भाटा लगनेसे द्वारिकासे छूटती है मोटरमेंजाने से, नागेश्वर महादेव और गोपी

तालाबका तीर्थ होता है नागेश्वर महादेव बारह ज्योतिर्लिंग में गिनो जाता है, भादों में बड़ा मेलो लगता है।

गोपी तालाब

फिर यात्री को मोटर गोपी तालाब ले जाती है, वहाँ यात्री स्नान ध्यान और दर्शन करता है यहाँ गोपीनाथ का मन्दिर महाप्रभुजी की बैठक स जीगोपाल का मन्दिर और साधुओं के बहुत से मन्दिर है यहाँ गोपी तालाबका चन्दन लेनेको बड़ा महात्म्य है गोपी तालाब में स्नान करने से पितृओंका मोच होता हैं गोपी तालाब म मोटर एक घन्टा पड़ी रहती है। फिर वही मोटर बेट द्वारिका जानेके लिये समुद्रके किनारे पर छोड़ देती वहाँ नाव तैयार रहती हैं उसीमें बैठकर नाव बेटद्वारिका पहुँचा देती है और बेटद्वारिका से लौटे हुए यात्री को लेकर द्वारिका मोटर लौटाती है।

बेट द्वारिका (शंखोधार तीर्थ)

बेट द्वारिकामें किनारे पर सरकारी चौकी है शहरमें जाने के लिये हरेक यात्री को चार आना म्युनिस्पल का का टैक्स देना पड़ता है यहाँ और कोई टैक्स नहीं है। बेट द्वारिका में मुख्य मन्दिर और गोपी तालाब शंखोधार तीर्थ हनुमान डाँडी, कल्पवृक्ष, र मजरोखा मन्दिर

देखने योग्य है फिर बेट द्वारिका जी की यात्रा पूर्ण करके नाव ओखा बन्दर छोड़ देती है।

ओखापोर्ट

ओखापार्ट बड़ा बन्दर है इसी बन्दर का सरकारने विकाश किया है वहाँ व्योपारियों का और कारखाने के लिये विदेश में से बड़ी अगनबोट आती हैं वहाँ बर्माशेल का कारखाना और रेलवे के डिब्बा बनते हैं। पोर्ट देखने योग्य है बड़ोदा नरेश (सयाजीराव ने) लाखों रुपया खर्च करके बनाया है।

द्वारिकाजी से सुदामापुरी मूल द्वारिका

गोमती द्वारिकासे पाँचवाँ स्टेशन मटिया लगता है यहाँ सुदामापुरी जानेके लिये मोटर रहती है बहुत बारिस गिरने से मोटर तीन महीना बन्द रहती है यहाँ से मोटर का मार्ग खुला रहता है सुदामापुरी जाने के लिये बहुत कम खर्चा लगता है माटीया स्टेशन से मोटर आशापुरा देवी और वीरविक्रमने स्थापित किया हुआ हर्षददेवीका भव्य मन्दिर का दर्शन कराती है वहाँ रहने के लिये बहुत सी धर्मशाला हैं हर्षद देवीका पुराना मन्दिर ३०० पेडी पर है ऊपर से सृष्टि सौन्दर्य और समुद्रकी लीला देखने योग्य है समुद्रपार सामने किनारे सुदामाजीके लिये

मोटर तैयार रहती है बीच में मूल द्वारिका जी का दर्शन पड़ता है और साधु सन्यासी आके गरम छाप लेते हैं मूलद्वारका जी से सीधी मोटर सुदामापुरी (पोरबन्दर) छोड़ देती है।

पोरबन्दर

पोरबन्दर बड़ा बन्दरगाह है और महात्मा गाँधीजी जन्म स्थान है वहाँ कीर्ती मन्दिर, सुदामाजी का मन्दिर, सत्यनारायण जी का मन्दिर, कन्या गुरुकुल सब देखने योग्य है महाराणा कापड़ मील सुदामापुरीसे आने जाने के लिये गाड़ी और ट्रेन मिलता है सुदामापुरी से गीरनार, प्रभास, जामनगर, राजकोट हरेक टाइमपर मोटर और ट्रेन मिलती हैं।

जगन्नाथपुरी

भारत के चार प्रधान तीर्थों में श्री जगन्नाथजी का मुख्य स्थान है हिन्दुओं के तीन प्रसिद्ध तीर्थ समुद्र तट पर हैं केवल केदारनाथ और बद्रीनाथ हिमालय पर्वतके उच्च शिखर पर है, श्री जगन्नाथपुरी भारतके पूर्वीय तट उड़ीसा प्रान्त के अन्तर्गत है लाखों यात्री भारत के भिन्न प्रान्तोंसे जगन्नाथपुरी पहुँचते हैं एकता, समता प्रेम और अभेद बुद्धि का जितना अच्छा सम्मिश्रण देखने को यहाँ मिलता है उतना अन्य किसी भी तीर्थ

में नहीं। श्री जगन्नाथपुरी का प्राचीन नाम पुरुषोत्तम क्षेत्र है जो नीलगिरी पर्वत पर स्थित है सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मा को विष्णु भगवान ने इस पर्वत पर दर्शन दिया और बोले हे चतुरानन समुद्र के उत्तर और महानदी के दक्षिण का प्रदेश अति पवित्र है जो मनुष्य वहाँ निवास करता है उसे सब तीर्थों के फल प्राप्त होते हैं, मैं वहाँ सदा निवास करता हूँ। इस स्थान का प्रलय में भी लय नहीं होता नीलगिरी पर एक वट वृक्ष है उसके मूल से पश्चिम की ओर रोहिणी कुण्ड नामक एक सरोवर है उसके तट में स्थिति रहता हूँ जो मनुष्य उस कुण्ड में स्नान कर मेरा दर्शन करता है उसको मुक्ति मिलती है।

पुरी का मन्दिर अति प्राचीन है, मन्दिर को बने आठसौ वर्ष हुए जिसे उड़ीसा के प्रथम राजा गंगेश्वरने बनवाया, पुरी से समुद्र १ मील पर है जहाँ ३-४ मील तक रहने को सुन्दर बंगले और मकानात बने हुए हैं। पुरी के बीच में एक २० फुट ऊंचा टीला है जिसे नील-गिरी कहते हैं श्रीजगन्नाथजी का मन्दिर इस टीले पर है जो अति विशाल है। पुरी डेढ़मील चौड़ी ३ मील लम्बी है यहाँ न तो मथुरा, काशीकी तरह अन्य मन्दिर ही है और न कोई व्यापार ही है पुरी के सर्वस्व जगन्नाथ जी ही हैं उन्हीं के एक मात्र मंदिर से पुरी कहलाती है।

जगन्नाथ जी के मन्दिर से जनकपुर तक खूब चौड़ी सड़क है जिसके दोनों तरफ पन्डों के मकान और महन्त तथा मठाधीशों के अनेक मठ हैं मकान यहाँ के प्रायः कच्चेही हैं, किन्तु समुद्रतट वाले मकानात सुन्दर स्वास्थ प्रद, नये ढङ्ग की बनावट के हैं और धीरे धीरे समुद्रतट आबाद होता चला जा रहा है, पुरी जाने को हावड़ा से खड़गपुर होते जाते हैं। प्रायः उत्तर भारतके लोग इसी मार्ग से जाते हैं, किन्तु कुछ लोग प्रयाग, काशी, गया, वैद्यनाथ धाम और आसन सोल होकर खड़्गपुर पहुँच जाते हैं, पंजाब के यात्री दिल्ली, मथुरा, आगरा, झाँसी, भोपाल, नागपुर, विजय नगर होकर पुरी को जाते हैं पश्चिम की ओर से आने वाले बम्बई, पूना वाड़ी बेजवाड़ा से जाते हैं दूसरा रास्ता बम्बई, भुसावल नागपुर होकर भी है मद्रास वाले बेजवाड़ा, विजय-नगर होकर जाते हैं, कुछ लोग कटक से ४२ मील पक्की सड़क द्वारा भुवनेश्वर करके पैदल यात्रा करते हैं।

श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर बड़ा विशाल है। उसका बाहरी परकोटा ६६५ फीट लम्बा ६४० फीट चौड़ा है ऊँचाई २४ फीट है चारों दिशाओं में ४ बड़े द्वार हैं जिनमें पूर्व का द्वार जिसे सिंह दरवाजा कहते हैं अति सुन्दर है इसके सामने काले रङ्ग के एक ही पत्थर

का ३५ फीट ऊँचा १५ कोण का "अरुण स्तम्भ" है जिसके ऊपरी भाग में सूर्य के सारथी अरुण की मूर्ति है सिंह द्वार से भीतर जाकर दूसरा परकोटा मिलता है जिसकी लम्बाई ४२० फीट और चौड़ाई ३१५ फीट है इस परकोटे के भी ४ दरवाजे ठीक बाहर के दरवाजों के सामने ही हैं, श्री जगन्नाथजी का मंदिर ४ भागोंमें विभक्त है, विमान, जगमोहन, नृत्य मंदिर और भोग मंडप। विमान—श्री भगवान जगन्नाथजी के रहने का मुख्य स्थान है अर्थात् प्रधान मूर्ति यहीं पर है, विमान की ऊँचाई २१४ फीट लम्बाई ८० फीट और चौड़ाई भी ८० फीट है उसके ऊपर नील चक्र है और उस पर ध्वजा है, इस चक्र का व्यास १७ हाथ का है यह चक्र और ध्वजा ५-६ मील से दिखाई देती है, भगवान की प्रधान मूर्ति "रत्न वेदी" पर है जिसके ऊपर ६ फीट लम्बा सुदर्शन चक्र है। समय समय पर भगवान के अनेक शृङ्गार किये जाते हैं। प्रातः काल का बहुत सादा वेष है जिसे मङ्गला आरती का शृङ्गार कहते हैं। उसके बाद, अवकाशवेष, प्रहरवेष, चन्दनवेष, दामोदर वेष, बुद्ध वेष और गणेश वेष आदि बनाये जाते हैं मूर्तियों का शृङ्गार होने के बाद पट खुलते हैं। मंदिर के अन्दर प्रकाश की कमी होने से बिना दीपक के

भगवान के साफ दर्शन नहीं हो सकते, यात्री रत्नवेदी के पास जाकर बिना किसी कर के दिये अच्छी तरह दर्शन और परिक्रमा कर सकते हैं। जगमोहन १२० फीट ऊँचा और ८० फीट लम्बा ८० फीट चौड़ा है। इसके तीन तरफ बड़े बड़े दरवाजे हैं। नृत्य मन्दिर ६९ फीट लम्बा ६७ फीट चौड़ा है। यहाँ भगवान का नृत्य होता है।

भोग मन्दिर १२० फीट ऊँचा ६० फीट लम्बा ६० फीट चौड़ा है जिस पर नीचे से ऊपर तक हजारों मूर्तियाँ बनी हुई हैं।

श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर के भीतर परकोटे में एक पीपल का वृक्ष है। उसके समीप ३८ फीट लम्बा और उतनाही चौड़ा एक मण्डप है। इसे (मुक्त मण्डप) कहते हैं। जहाँ बैठकर पूजा पाठ और हरि चर्चा हुआ करती है। पास में अक्षय वट है जिसके समीप प्रलय काल और विष्णुभगवानकी बाल मूर्ति है इन्हें बालमुकुन्द कहते हैं। पास में ही रोहिणी कुण्ड के पास विमला देवी का अति प्राचीन मन्दिर है। ताँत्रिकों की विमला प्रधान और पूज्य देवी है।

भगवान की पूजा १२ महीने बारी-बारी से वहाँ के पंडे करते हैं। हर रोज ३६ पुजारी पूजा को नियत

हैं, किन्तु जेठ पूर्णिमा से अषाढ़ पूर्णिमा तक १ महीना सावर वंश के शूद्र लोग जो यहाँ के मूल निवासी हैं, जो दैतापति कहलाते हैं, वे किया करते हैं। भगवानका प्रसाद विशेषकर भात खानेका यहाँ बड़ा महत्व है जिसे बिना भेद भाव के पाया जाता है, कहा भी है—

"जगन्नाथ के भात को, जगत पसारे हाथ" के ठेकेदारों की तरफ से यह भात आनन्द बाजार में बेचा जाता है। जिन्हें सभी कोई खरीद कर खाते हैं। यहाँ तक कि सभी द्विजाती मात्रा एक ही पत्तल पर इस महाप्रसाद भात को खा लेते हैं। किसी प्रकार का जूँठा नहीं माना जाता।

सेतुबन्ध रामेश्वर

भारतके चार प्रधान तीर्थों में दक्षिण समुद्र तट पर श्रीरामचन्द्रजी ने अपने हाथों श्री रामेश्वरजी की रचना की है। यहाँ पर लक्ष्मण कुण्ड पर मुण्डन होता है। फिर श्री रामेश्वर जी के दर्शन होते हैं। विस्तृत वर्णन ज्योतिर्लिंग वर्णन में लिखा गया है।

तीर्थ यात्रा-मार्ग दर्शक

भारतखण्ड के चारों दिशाओं में विराजमान प्रसिद्ध व प्रधान चारों तीर्थों एवम् १२ ज्योतिर्लिंग के अति-

रिक्त अयोध्या, मथुरा, काशी, हरिद्वार, काँची, उज्जयिनी और द्वारिका में सात पुरी हैं। इन सबके अतिरिक्त गङ्गा, यमुना आदि पवित्र नदियाँ, ज्वालामुखी आदि शक्ति क्षेत्र, बौद्धगया, सारनाथ, गिरनाथ आदि बौद्ध एवम् जैन तीर्थ इत्यादि हैं। चारों धाम की यात्रा करने वाले श्रद्धालु यात्री रास्तेमें पड़ने वाले इन छोटे बड़े सभी तीर्थों में ठहर कर यात्रा लाभ कर सकते हैं।

इन तीर्थों की यात्रा करनेसे देश भर के सब प्रदेशों व प्रान्तों आदिकी रहन-सहन चाल चलन, रस्मो रिवाज, खान पान व्यवहार व व्यवस्था आदि का ज्ञान भी हो जाता है। जिनकी जानकारी स्वतन्त्र देश के प्रत्येक नागरिक के लिए अपेक्षित है। अतः पाठकों को भी जानकारी के हेतु इनका संक्षिप्त वर्णन किया जाता है।

दिल्ली

इस नगरको कुछ लोग महाराजा दिलीपका बसाया मानते हैं, तो कुछ लोग इसे पान्डव महाराज युधिष्ठिरकी राजधानी कहते हैं। पान्डवों का राजसूय यज्ञ यहाँ ही हुआ था जिसमें समस्त पृथ्वी (भारत) के राजा एकत्र हुए थे। अन्तिम सम्राट पृथ्वीराज की राजधानी भी यही नगर रहा। मुसलमान बादशाहों की तथा अङ्गरेजी राज्य

की भी अब तक राजधानी रही और अब स्वतन्त्र भारत की भी राजधानी है।

इस नगर का संस्कृत नाम 'इन्द्रप्रस्थ' है। यहाँ हिन्दुओं का बड़ा प्राचीन मुख्य तीर्थ स्थल का नाम 'निगमबोध' है जो यमुनाके किनारे अब भी प्रसिद्ध है।

यह से १०, १२ मील दक्षिण को महरोली नाम से पृथ्वीराज के समय की दिल्ली है, जहाँ अब तक भी पृथ्वीराज का किला टूटा फूटा विद्यमान है। यहाँ ही तोमर महाराज अनंगपाल के समय की लोहे की लाट है। यहाँ हिन्दुओं का तीर्थ योगमाया देवी का है और मुसलमानों के वलीख्वाजा कुतुबुद्दीन की दरगाह है दिल्ली से कुछ मील के फाँसले पर नई दिल्ली भी देखने योग्य है।

दिल्ली में कई स्थान देखने योग्य हैं जैसे बादशाही किला, जामा मसजिद, हुमायूँ का मकबरा, लक्ष्मीनारायण मन्दिर, विधान परिषद भवन आदि २।

सोनपुर, हरिहर क्षेत्र एन० ई० रेलवे का प्रसिद्ध स्टेशन है जहाँ कार्तिकी पूर्णिमा को बड़ा भारी मेला लगता है। इस मेले में सभी पशुओं की खूब बिक्री होती है।

गया

यहाँ पहले फल्गू नदी मार्ग में आती है। इसमें स्नान करने तथा पाँव रखने मात्र से भी पितरों का मोक्ष होना शास्त्र में लिखा है। गयाजी में अनेक जगह श्राद्ध किये जाते है। विशेष मुख्य विष्णु पद, प्रेत शिला आदि हैं। यहाँ पर बुद्ध गया मे चीन, जापान ब्रह्मा आदि दूर-दूर के मुल्कों से हजारों बौद्ध यात्री हर साल तीर्थ यात्रा को आते हैं।

गया में स्याह पत्थर के खरल, प्याले वगैरह बहुत अच्छे बनते हैं।

कलकत्ता

हावड़ा स्टेशन से गङ्गा पार करके कलकत्ता बहुत बड़ा आलीशान शहर है। यहाँ कलकत्ता--यूनीवर्सिटी (महाविद्यालय) और हाई कोर्ट है, यहाँ की भाषा बङ्गाली है और प्रायः मनुष्य नंगे सिर रहते हैं, यहाँ काली देवीका मन्दिर परमपूज्य है, विशेषकर बङ्गालियों को परम मान्य है इधर का प्रधान भोजन भात है कलकत्ते में अजायब घर और चिड़ियाखाना देखने योग्य है। यहीं से गंगा सागर जाने को जहाज मिलते हैं। गंगसागर का प्रसिद्ध मेला प्रतिवर्ष मकर संक्रांति को होता है।

मद्रास

समुद्र के किनारे किनारे रेल जाती है, रास्तेमें कई शहर और कई नदियाँ आती हैं। जिसमें बेजवाड़ा बड़ा प्रसिद्ध जंक्शन है, यहाँसे हैदराबाद-दक्षिण नजदीक है, शहर हैदराबाद बहुत भारी है, यहाँ के नवाब निजाम हैदराबाद हिन्दुस्तान में सबसे बड़े रईस हैं, बेजवाड़ा के आस-पास सर्दी बिलकुल नहीं होती है।

मद्रास शहर में कई स्टेशन हैं, जिनमें "बीच" सबसे प्रसिद्ध है। शहर मद्रास भी बड़ा भारी है और बड़ी तिजारत की जगह है। मद्रास प्रान्त (दक्षिण) की राजधानी है यहीं पर गवर्नर रहते हैं यहाँ मद्रास यूनीवर्सिटी (महाविद्यालय) और हाईकोर्ट है इधर के मनुष्य प्रायः कालेहोते व भाषा मद्रासी बोलते हैं। प्रायः सब धोती पहनते हैं और तिलक लगाते हैं। मार बाड़ी बाजार से ३ मील के करीब यहाँ पार्थसार थी भगवान का पसिद्ध मन्दिर दर्शनीय है। इधर रेशमी किनारे का धोती जोड़ा बड़ा कीमती और उमदा होता है। पान केले भी बहुत होते हैं।

चिदम्बरम्

चगलपेट होते हुए चिदम्बर जाते हैं। यहाँपरशिव-

गंगा नदी है और महादेवजी का मन्दिर बहु प्राचीन मनु महाराज का स्थापित बताते हैं। मन्दिर बहुत ही बड़ा है जिसके चारों तरफ के दरवाजे दस २ मंजिल ऊंचे हैं बाहर परिक्रमा में बाग लगा है। भीतर तालाब भी है। राजसभा का स्थान इतना बड़ा है कि जिसमें ११०० खम्भ लगे हैं। कठेहडे सोने चाँदी के हैं मन्दिर की लागत करोड़ों रुपयों की है। अब भी किसी नाटकोट के साहूकार ने २५ लाख रुपये लगाकर मरम्मत करादी है। इसमें १ मूर्ति सोने की है जिसको नटराज कहते हैं और एक बिल्लोर की तथा एक मूर्ति माणिक्य की एक बिलस्त ऊंची है। दूसरी तरफ सोने के सिंहासन पर बड़ी मूर्ति गोविन्दराज शेषावतार की है। एक तरफ के चाँदी सिंहासन पर शिवकामसुन्दरी देवीजी हैं।

स्टेशन से एक मील के अनुमान कावेरी गंगा है। यहाँसे अन्दाजन २ मील श्रीरंगनाथ भगवानका मन्दिर है। इस मन्दिरकी ७ परिक्रमा हैं, जिसमें बाहरकी दोनों परिक्रमाओं में शहर आबाद है, भीतर की ४ परिक्रमाओं में मन्दिर का कारखाना हरेक परिक्रमा का डण्डा और दरवाजे जुदे-जुदे हैं। इस मन्दिर की हद सब मन्दिरों से ज्यादह है। मूर्तियाँ श्रीरंगनाथ जी की दो हैं। १ छोटी, दूसरी बड़ी आठ दस हाथ लम्बी शेष शय्यापर

विराजमान हैं। दूसरी तरफ एक मन्दिर में लक्ष्मीजी हैं मन्दिर में सोने चाँदी के वाहन पात्र बहुत हैं शहर के चारों तरफ बागात हैं, वृन्दावन में श्रीरंगजी का मन्दिर इसी नक्शे पर बना है, परन्तु वृन्दावन का मन्दिर इससे बहुत छोटा है। श्रीरंगजी पर सहस्त्र नाम से तुलसी दल चढ़ते है। मन्दिर के सामने दस बारह हाथ ऊँची गरुण जी की मूर्ति भी बड़ी सुन्दर है। छोटी कावेरी १ मील पर जंवुकेश्वर महादेवजी का मन्दिर बड़ा भारी है। यहाँ पिंडी जलतत्व हैं यहाँ भी नाटकोट के साहूकारों ने पाँच लाख रुपये लगा के मरम्मत करायी है।

मदुरा

यहाँ पर मीनाक्षीदेवी का मन्दिर बड़ा भारी है। करोड़ों की ही लागत का समझिये। मन्दिर की बाहरी परिक्रमा में लोहे का जंगला लगा है, इसमें बाग भी लगे हैं। भीतर एक कमरे में तालाब है और बाग है यहाँ से तोताद्रि, पद्मनाभ, जनार्दन कन्याकुमारी आदि आदि तीर्थ निकट में हैं, वहाँ पर भी बड़ भारी मन्दिर हैं। यहाँ से कुछ दूरी पर जैनबद्री, मूलबद्री, जैनियों के तीर्थ हैं।

कांची

मदुरा से वापिस त्रिचनापल्ली होते हुए तंजौर मायावर चेंगपेट होकर शिवकाँची पहुँचते हैं। शिवकाँची नगर खासा है, चौपड़ के बाजार चौड़े-चौड़े हैं। यहाँ शिवजी की पिंडी चौरस १ हाथ ऊँची मृतिका की है। इस पर जल की जगह तेल चढ़ता है। यह पिंडी पृथ्वी-तत्व है। यहाँ भी शिव सहस्त्र नाम से बिल्वपत्र चढ़ते हैं। यहाँ भी मन्दिर बड़ा भारी है। इस मन्दिर की मरम्मत भी नाटकोट के साहूकारों ने १५ लाख रुपये लगाकर करायी है। यहाँ से ३ मील विष्णु काँची है पर बस्ती मिली हुई ही है यहाँ का मन्दिर दो मंजिला है। भगवान की मूर्ति यहाँ १ छोटी दूसरी बड़ी अति सुन्दर है। नीचे नृसिंहजी का तथा लक्ष्मीजी के मन्दिर हैं। मन्दिर की दीवालों के पत्थरों पर वेद लिखा हुआ है। भाषा यहाँ द्राविड़ी बोलते ह। काँची भी सातों पुरियों में है।

यहाँ से दक्षिण को त्रिविलुर स्टेशन से वीर राघव जी के दर्शन हैं।

त्रिपति व बालाजी

काँची से आरकोट होते हुए रेनी गुंटा स्टेशन है। यहाँसे ६ मील स्टेसन त्रिपाती है। यहाँ बाबा मनीराम

की धर्मशाला अच्छे मौके पर है। त्रिपतीमें गोविन्दराजी का मन्दिर दर्शनीय है। त्रिपती से १॥ मील अनुमान पर बालाजी का पर्वत है। इसे बेंकटाचल भी कहते हैं, पहाड़ की चढ़ाई मे कई जगह सीढ़ी बनी हैं यहाँ वृक्षों का बड़ा सघन बन है। यहाँ बाला जी से ३ मील पापनासिनी गंगा है। जिसमें स्नान करनेसे मनुष्य के प्रत्यक्ष पाप कटते मालूम पडते हैं अर्थात् स्नान करते ही पानी ऊपर पड़ते ही रंग सफेद हो जाता है। जैसे चावलों का माड़ हो फिर दूर तक गंगा में वह धार अलग ही दीखती है। इसके पास ही दूसरी ब्रह्मधारा है, उसमें यह बात नहीं है।

यहाँ पर पान्डवों की गुफा और पान्डव तीर्थ है, मूर्ति श्रावाल जी विष्णु भगवान की सुन्दर वर्ण है, यहाँ पर नीचे गरमी और पहाड़ पर सरदी है। यहाँ पर बाबा हाथीराम का मठ है, जिसकी इमारत बड़ी भारी है। यहा से थोड़ी दूर पर कपिल तीर्थ है।

हौसपेट (पंपापुर)

रास्ते में गुटकल स्टेशन से छोटी गाड़ी में सवार होकर हौसपेट पहुँचते हैं।

हौसपेट स्टेशनसे पंपापुर ७ मील है। पंपापुर अब छोटी सी बस्ती है यहाँ पर तुङ्गभद्रा नदी है। यहाँ

पहले सुग्रीव रहे थे यहाँसे आधे मील में चक्र तीर्थ है जहाँ रामचन्द्रजी का मन्दिर है और नंदी के पार ऋष्यमूक पर्वत है। जहाँ श्री रामचन्द्रजी की हनुमान तथा सुग्रीवसे प्रथम भेंट हुई थी। यहाँ पर रामचन्द्रजीने बहुत दिन व्यतीत किये थे यहाँ ही लंका पर लड़ाई की तैयारी की थी। उस समय यहाँ पानी नहीं था, पंपा बाण मार के नदी निकाली वह भी विद्यमान है। पंपापुरसे ३ मील किष्किंधा सुग्रीवकी राजधानी है।

नांदेड़—निजाम राज्य की छोटी लैन पर सिखों का प्रसिद्ध तीर्थ है।

नासिक

सैन्ट्रल रेल्वे की बड़ी लाइन पर बम्बई से ११७ मील दूर मनमाड़ के रास्ते में नासिक रोड स्टेशन से ७ मील पर नासिक है नासिक शहरके पास ही गोदावरी गंगा है। गोदावरी से आधे मील पंचवटी है। यहाँ पर एक गुफा सीतागुफा नाम से पृथ्वी के नीचे है. गुफा के भीतर श्री रामचन्द्रजी का मन्दिर है, गुफा के अन्दर ही दूसरी तरफ शिवजी का मन्दिर है। यहाँ पर उस समय ५ वट के वृक्ष थे, इसी से पंचवटी नाम हुआ। यहाँ से डेढ़ मील तपोवन है। यहाँ ही दण्डकारण्य है। जहाँ रामचन्द्रजी ने शूर्पणखा की नाक काटी थी और

पंचवटी की गुफा से ही रावण सीताजी को छल से हर ले गया था। नासिक शहर से २० मील के अनुमान त्र्यम्बकेश्वर महादेवजी का मंदिर है, जो द्वादशज्योतिर्लिंगों में से है। यहीं से गोदावरी निकलती है। यहाँ भी कुम्भ का महापर्व होता है।

बम्बई

बम्बई शहर हिन्दुस्तान में व्यापार में सबसे बड़ा और आबादी के लिहाज से दूसरे नम्बर का शहर है। प्रायः विलायतों का विशेष माल बम्बई से ही आता है। और यहीं से जाता भी है, शहर में मुम्बादेवी, भोलेश्वर, बाबुलनाथ और महालक्ष्मी जी के मन्दिर उत्तम हैं यहाँ पर बम्बई यूनीवरसिटी (महाविद्यालय) और हाईकोर्ट है। प्रिन्स आफ वेल्स म्यूज़ियम, विक्टोरिया गार्डन, शान्ताकूज और तुलसी तालाब दर्शनीय हैं।

पोर बन्दर

यहाँ कभी कृष्ण महाराज के सखा भक्त सुदामाजी की झोंपड़ी पड़ी थी। कृष्ण की कृपा से महलात बन गये थे। इसका नाम सुदामापुरी भी है।

जूना गढ़ गिरनार

जूनागढ़ शहर से ३ मील के लगभग गिरनार पर्वत है। गिरनार के चारों तरफ चार पहाड़ हैं। गिरनार

पर्वत पर चढ़ने में ९ हजारके करीब सीढ़ी हैं । थोडी दूर चलकर गोपीनाथ भर्तृहरिजी की गुफा है । आगे गौमुखी है । ऊपर अम्बादेवी का मन्दिर, दूसरी तरफ गोरखनाथकी गुफा व समाधि है । तीसरी तरफ औघड़नाथकी समाधि, चौथी और दत्तात्रेय भगवान की चरणपादुका और स्वामी रामानन्द की समाधि है गिरनार जैनियों का भी बड़ा तीर्थ है पहाड़ से नीचे शहर के पास गिरधर जी, जरासिंहजी, दामोदरजी, भाऊनाथजी की मूर्तियों के दर्शन हैं । यहाँ पर एक मकबरा नवाब साहब का बहुत अच्छा बना हुआ है ।

वहाँ से १२ मील पर प्रभासपाटन है। यहीं पर सोमनाथ महादेवजी का मन्दिर है। गवर्नमेन्ट ने नया मरम्मत कराया है । पाँच लाख लगा रुपया है ।

अहमदाबाद

अहमदाबाद अच्छा शहर है । बड़ी २ भारी मण्डी हैं यह शहर गुजरातमें कीराजधानी है भाषा गुजराती है। कपड़ों की बड़ी बड़ी मिलें समस्त भारतमें सबसे अधिक यहाँ हैं ।

डाकोरजी

डाकोरजी में किसी समय भक्त रामदास जी की भक्तिके प्रताप से श्री द्वारकानाथ जी पधारे थे जिसकी कथा भक्तमाल में है । मूर्ति यहाँ रणछोर द्वारकानाथ

जी की डेढ़ हाथ ऊँची अति मनोहर है।

मन्दिर के पास गोमती तालाब का जल बहुत मधुर और निर्मल है। दूसरे मन्दिर में लक्ष्मणजी, बलदेवजी की और रामदास भक्त की मूर्ति है। रास्ते में गोधरा देवबन्द होते हुए रतलाम आते है। रतलाम भी शहर अच्छा है। उज्जैन यह भी पुरियों में से है। यहाँ पर शहर के निकट ही चिप्रा नदी है। शहरमें महाकालेश्वर महादेव का मन्दिर है। यह द्वादश ज्योतिर्लिंग में है। यहाँ अब तक विक्रमादित्य के किले का दरवाजा मौजूद है शहर भी बड़ा और पुराना है। शहर मे थोड़ी दूर गोपीचन्द भर्तृहरि की गुफा है। यहाँ से थोड़ी ही दूर पर साँदीपनि ऋषि का स्थान है, जहाँ कुछ समय कृष्ण महाराज ने विद्याध्ययन किया था।

श्रीनाथद्वारा व कांकरोली

फिर रतलाम होकर नोमली मन्दसौर नीमच और चित्तौड़गढ़ होते हुए अजमेर के रास्ते पर नीमच शहरसे १४ मील उत्तर को सुखानन्द नाम का तीर्थ स्थान ह।

चित्तोड़ स्टेशन से उदयपुर को रेल गई है। उसके मालवी स्टेशनसे श्रीनाथ द्वारा जाते हैं। यहाँ पर मूर्ति श्रीनाथजी की सवा हाथ ऊँची बड़ी रमणीक है। नित्य ११०० ग्यारह सौ रुपये उदयपुर का भोग लगाया जाता

है। केशर चक्कियों से और कस्तूरी सिलवटों से पिसता है, भोग के सैकड़ों पदार्थ पकवान और भात वगैरह बड़े ही उत्तम होते हैं। ऐसी मिठाई और कहीं देखने में नहीं आयी और भोगके सब पदार्थ मिठाई वगैरह बाजार में बिकते हैं जिससे सबको आसानी से मिल जाते हैं।

नाथद्वारे से थोड़ी दूर काँकरोली में भी बालकृष्ण जी का बड़ा मन्दिर है पास में एक समुद्र (सरोवर) कई मील लम्बा बड़ा रमणीक है यहाँ उदयपुर के ही राज्य में चारभुजा एकलिंग महादेव का स्थान भी पूज्य है। जैनियों का तीर्थ केशरियानाथ का मन्दिर भी थोड़े फासले पर है। उदयपुर शहर का प्राकृतिक सौन्दर्य झील के कारण बहुत बढ़ गया है।

अजमेर शहर पुष्कर

अजमेर ख्वाजा साहब की दरगाह का बड़ा भारी मकबरा है। यहाँ सैकड़ों ही मुसलमान यात्रा को आते हैं। पहाड़ी तारागढ़ एक पुराना किला है।

अजमेरसे ७ मीलदूर पुष्करराज तीर्थ है। पुष्करराज एक बड़ा तालाब कई मील के घेरे में है पुष्करमें मगर बहुत हैं। कोई भी अन्दर घुसकर स्नान नहीं कर सकता, यहाँ पर ब्रह्मजी का मन्दिर अद्वितीय और परम मान्य है। यहाँ से डेढ़ मील एक ऊँचे पहाड़ी टीले पर सावित्री जी का मन्दिर है। डेढ़ मील पर वृद्धपुष्कर भी

है जहाँ की रेती में पानी का निवास है और ऐसे कठिन समय में भी अपना प्रवाह दिखा रहा है। पुष्कर में दो बस्ती कहलाती हैं। छोटी बस्ती में पण्डे गौड ब्राह्मण रहते हैं और बड़ी बस्ती में (पाराशर) ब्राह्मण पण्डे हैं।

कृष्णगढ़ और सलेमाबाद

बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे पर अजमेर से १८ मील दूर कृष्णगढ़ में बड़ा भारी किला और तालाब है। कृष्णगढ़ सलेमाबाद से १० मील दूर है। कृष्णगढ़ स्टेशन पर सवारी मिल सकती हैं। सलेमाबाद निम्बार्क सम्प्रदाय की मुख्य गद्दी है। वहाँ पर श्री जी महाराज विराजते हैं और बंगालियों के मस्तक के ठाकुर श्री राधामाधव जी का मन्दिर भी दर्शन करने योग्य है। और गुरु परशुराम रनदेवजी की समाधि भी हैं। यहाँ पर श्री ठाकुरजी के भोग, राग उत्सव जो समय-समय पर होते हैं, देखने योग्य है।

जयपुर--रेवाड़ी आदि

जयपुर शहर भी देखने योग्य है सब बाजार गली-कूचे सभी चौपड़ के हैं। देशी कारीगरीमें जयपुर हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध है जयपुर से दिल्ली आने में रास्ते में अलवर शहर तथा रेवाड़ी पड़ते हैं। रेवाड़ी दिल्ली के

दरम्यान फरूखनगर नामी छोटा सा शहर है। यहाँ पर पहले नमक बहुत बनता था। फरूखनगर और दिल्ली के बीच में गुरगाँव में सीतलादेवी का प्रसिद्ध मन्दिर है, चैत्र से आषढ़ तक हर सोमवार को बड़ा भारी मेला होता है और यह पाण्डवों के गुरु द्रोणाचार्य जी का स्थान-मन्दिर है

कुरुक्षेत्र

यहाँ से थोड़ी दूर पर कुरुक्षेत्र नामक बड़ा सरोवर है। सूर्य ग्रहण पर यहाँ बड़ा भारी मेला होता है। इस भूमि में कौरव पाँडवों का महाभारत नाम युद्ध हुआ था। ग्यारह अक्षौहिणी सेना सहित बड़े-बड़े बली कौरवों की हार हुई थी और सात अक्षौहिणी सेना वाले पाण्डवों की जीत हुई थी। पाण्डव वीर अर्जुन के सारथी कृष्ण महाराज हुए थे।

अमरनाथ जी

यह द्वादश ज्योतिर्लिंग में से है यहाँ पर शीत बहुत पड़ता है। पिण्डी शिवजी की बरफ की है जो कृष्ण पक्ष को क्रम से नित्य घटती तथा शुक्ल पक्ष को बढ़ती है तथा यहाँ पर एक कबूतर का जोड़ा पूनों के दिन अवश्य प्राप्त होता है जिसके भी दर्शन करने का महात्म्य है। इस मार्ग से काश्मीर कमीर रस्ता है।

ज्वालाजी व पठानकोट

उत्तर रेलवे के पठानकोट से स्टेशन काँगड़े को जाते हैं। काँगड़ा में भी देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है। काँगड़े से थोड़ी दूर ज्वालाजी हैं। यहाँ देवी जी की मूर्ति अग्नितत्वमय है, अर्थात् मन्दिर के बीच में तथा अन्य स्थान में भी अग्नि की ज्योति निकलती है। दोनों नवरात्रों में बड़ा भारी मेला होता है। पठानकोट से जम्मू तक, श्रीनगर व काश्मीर को मोटर जाती है। काश्मीर इलाके में प्रवेश करने के लिये आज्ञा प्राप्त करना जरूरी है, जो बड़ी आसानी से अमृतसर में प्राप्त हो सकती है।

अमृतसर

उत्तर रेलवे का जंकशन, व्यापार का केन्द्र है, यहाँ शाल-दुशाले और ऊनी कपड़े, चाय हींग और किराने व लोहे के सामान की बड़ी मण्डी है। सिक्ख सम्प्रदाय का प्रसिद्ध तीर्थ है। पठानकोट को यहीं से गाड़ी जाती है, श्रीनगर को काश्मीर जाने के लिए यहाँ परमिट मिल जाता है, मोटरें श्रीनगर को यहाँ से भी जाती हैं। स्वर्णमन्दिर और तीर्थ दुर्गयाना दर्शनीय स्थान हैं। यहाँ से १५ मील अटारी नामक स्टेशन पर भारत व पाकिस्तान की सीमा मिलती है।

श्री पशुपतिनाथ यात्रा--नैपाल

श्री पशुपतिनाथ जी का मन्दिर नेपाल राज्य की राजधानी काठमाण्डू से २ मील पश्चिम की ओर बाग-मती नदी के किनारे है। मन्दिर में श्याम पाषाण की १ गज ऊँची लिंकार मूर्ति है जिनकी १ हाथ ऊँचाई पर ४ शिर और ८ भुजाएँ हैं। पुजारी के अतिरिक्त मूर्ति को दूसरा कोई स्पर्श नहीं कर सकता। नदी के दूसरे किनारे पूर्व की तरफ गुंजेश्वरीदेवी और बाबा गोरखनाथ जी के मन्दिर हैं यहाँ अन्य रम्य स्थान और धर्मशालायें भी हैं।

मेला—श्रीपशुपतिनाथ जी की यात्रा का मेला केवल फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी (शिवरात्रि) को लगता है वहाँ जाने की और समय आज्ञा नहीं है, शिवरात्रि पर ४०--५० हजार यात्री इकट्ठे हो जाते हैं।

पासपोर्ट—नेपाल राज्य की ओर से हर एक यात्री को आज्ञापत्र मिलता है और सारी यात्रा का प्रबन्ध नेपाल राज्य की ओर से हुआ करता है रास्ते भर में पडावों पर धर्मशालाओं के अलावे तम्बू, छोलदारी, डेरे आदि भी लगाये रहते हैं सदावर्त लेने वालों को सदा-वर्त भी मिलता है। साधु-महात्माओं को भोजन छादन तथा स्थानादि की व्यवस्था अनुकूल रहती है।

रेल मार्ग—गोरखपुर या मुजफ्फरपुर होते हुए

रक्शौल पहुँचते हैं, रक्शौल भारत की अन्तिम सीमा पर है कुछ दूर से नेपाल राज्य की रेल मिलती है। रक्शौल से १४ मील वीरगंज स्टेशन है जहाँ से १० मील अम्बकागंज आखीरी स्टेशन है।

मोटर—अम्बिकाजंज से भीमफेरी २४ मील तक मोटर-लारी जाती है, यहाँ पासपोर्ट बदला जाता है।

पैदल यात्रा भीमफेरी से पशुपतिनाथ २० मील है, भीमफेरी से पहले शीशगिरी की ३ मील की चढ़ाई है बीच में २ मील पर एक किला है वहाँ पर पासपोर्ट जाँच होती है। गढ़ी से १ मील कठिन चढ़ाई के बाद २ मील की उतराई है जो कुलीखाना तक गई है। कुली खाना से पाखू तक १॥ मील मैदान का सीधा रास्ता है। पाखू से चित्तल्लाँग २॥ मील सीधा रास्ता है। चित्तल्लाँग से १॥ फर्लाङ्ग एकदन्ता पर्वत की साधारण चढ़ाई के बाद १ मील चन्द्रगिरि की चढ़ाई है। चन्द्र-गिर से थालकोट तक २ मील का उतार है। यहाँ भी पासपोर्ट की जाँच की जाती है। थालकोट से काठमाण्डू ६ मील है। मोटर तथा पैदल का मार्ग है काठमाण्डू से पशुपतिनाथ जी का मन्दिर पैदल से २ मील और मोटर से ४ मील है।

मौसम—पशुपतिनाथ यात्रा में शीतकाल होने से ठंड तो पड़ती ही है लेकिन बर्फ नहीं मिलता और न

किसी बीमारी का डर ही रहता नैपाल राज्य प्रबन्ध यात्रा के समय अच्छा रहता है, पासपोर्ट शिवरात्रि के ७ रोज आगे रक्शौल अथवा वीरगंज प्राप्त किये जाते हैं जो १५ दिन के लिए होते हैं।

* भजन * नाथ कैसे गज को फन्द छुडायो।
यह अचरज मोहि पायो ॥ नाथ० ॥
गज और ग्राह लड़े जल भीतर, लड़त लड़त गज हारे
जब तिल बूंद रही जल ऊपर, तब हरिनाम पुकारो।ना
शिवरी के बेर सुदामाके तन्दुल, रुचि रुचि भोग लगाओ
दुर्योधन की मेवा त्यागी, साग विदुर घर खाओ। ना
बैठ पताल काली को नाथो, फनपर नृत्य करायो।
गिरि गोवरधन कर पर धारो, नन्द घर लाल कहायो॥ना
अघासुर मारो वकासुर मारो, दावानल पान कराओ।
खम्भ फाड़ हिरणाकुश मारो, नरसिंह रूप धराओ॥नाथ
अजामिल, गज गणिका को तारो, द्रोपत चीर बढ़ाओ।
पयपान करत पूतना मारी, कुबजा रूप बनाओ॥ नाथ.
दुर्योधन को मान घटायो, मोहे भरोसा आयो॥ नाथ.
छोड़ पावड़ी पादे धायो, वेगे गरुड़ बुलाओ।
जल बूड़त गजराज उभारो, तब वैकुण्ठ पठायो॥नाथ०।

राग धनाश्री

देखत श्याम हँसे सुदामाजीकूँ देखत श्यामहँसे...टेक

फाटीसी धोती टूटि पनैयाँ चलत पाँउ घसे...सु०

हाथमें लकरी मस्तक कँपे लाल झरे मुखसे...सु०

भाभीने कुछ भेट पठाइ चावल चार पसे...सु०

सूरदास कहे प्रभुकी कृपासे कंचन महेल वसे...सु०

पद धनाश्री

मंदिर देख डरे सुदामाजी मंदिर देख डरे...टेक

आगे थी मेरी घासकी छपरीया कंचन मेल वले...सु०

घरके आगे तुलसी का क्यारा सुंदर वृंद खडे...सु०

तुटी फुटी हारपे फुरियाँ सुवर्ण कुंभ भरे...सु०

दरिद्र पत्नी निरख बुलाये भगवान चोकी करे—सु०